चन्दामामा

फरवरी १९७३

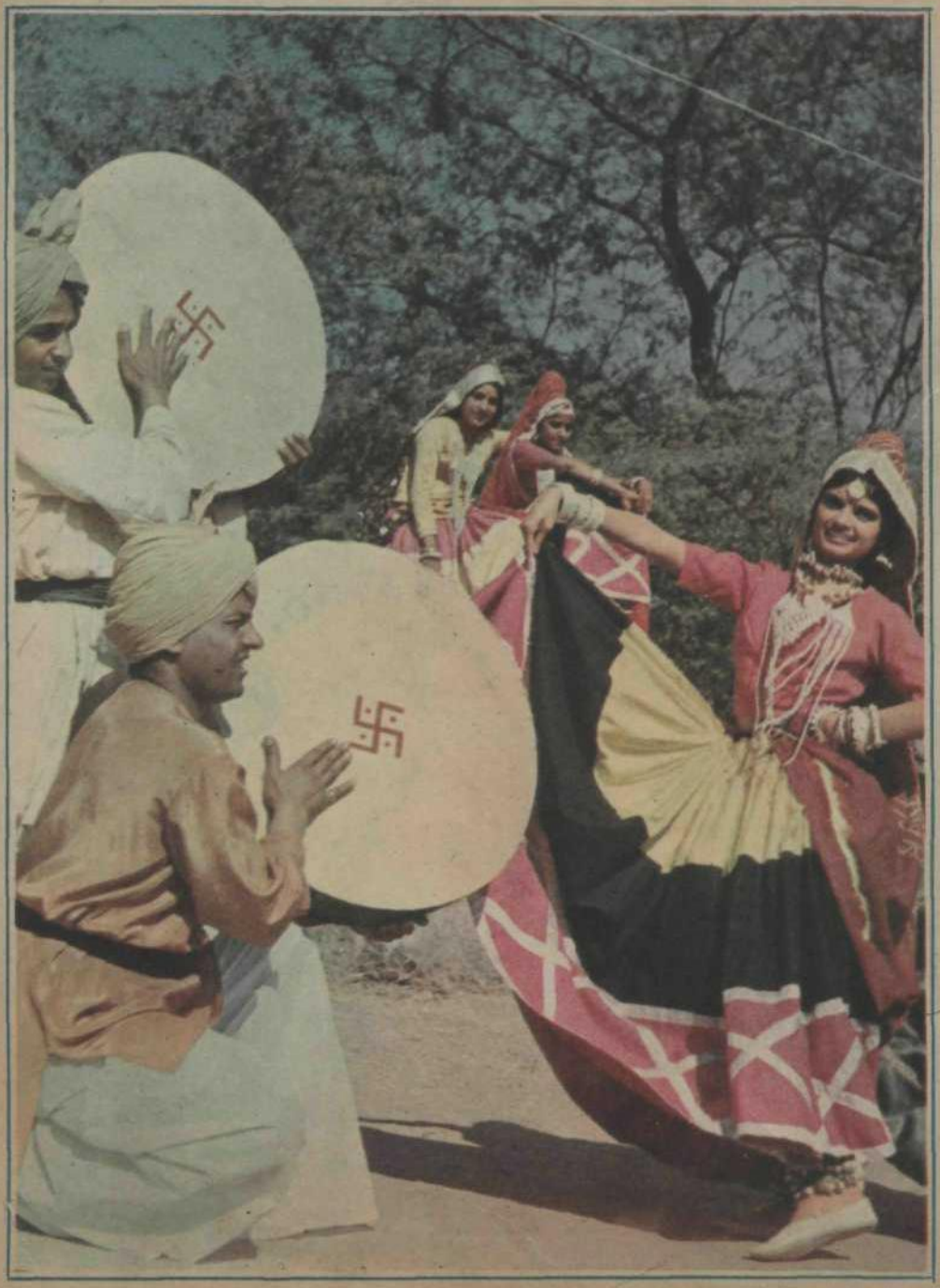

Photo by : RAM KRISHNA SHARMA

रसीली...प्यारी...मज़ेदार.

सिर्फ़ २५ पैसे

नयी पारले

पॉपिन्स

फलों के स्वादवाली गोलियां

अनानास, नींबू, नारंगी, मोसंबी व रास्पबेरी—
पांच फलों के स्वादवाली १३ स्वादिष्ट गोलियां—
हरेक शानदार, कम कीमत के पैक में।

पॉपिन्सका स्वाद चखो, पांच फलों का मज़ा लो

everest/1226/PP hin

प्रत्येक पुस्तकालय में रखने योग्य!

★

'SONS OF PANDU'
Rs. 5-25

'THE NECTAR OF THE GODS'
Rs. 4-00

अंग्रेज़ी में रचित: लेखिका
श्रीमती मधुरम भूतलिंगम

भेंट देने व संग्रह करने योग्य बालकोपयोगी पुस्तकें!

★

आज ही आदेश दे:

डाल्टन एजेन्सीस

'चन्दामामा बिल्डिंग्स'

मद्रास-२६

स्वान पेन

अंतरिक्ष युग के छात्रों के लिए

स्वान पेन आधुनिक पीढ़ी का मनपसंद पेन।
एकमात्र स्वान ही पेन है जो इतना सहजता से लिखता है, स्वान ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज पेन इस्तेमाल कीजिए और सफलताओं के चांद-सितारे तोड़ लीजिए।
बढ़िया लिखाई के लिए
स्वान
डिलक्स स्याही
इस्तेमाल कीजिए
SWAN
hero's SI-120 hn.

स्वान (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड
अडवानी चैम्बर्स, फि. मेहता रोड, बम्बई-१
शाखा: ३४ बी, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-१

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास-२६

सरदर्द, मोच, सर्दी-जुकाम और पेशियों के दर्द से शीघ्र छुटकारा पाने के लिये अमृतांजन मालिश कीजिये। पिछले ७५ वर्षों से भी अधिक समय से यह एक निर्भरयोग्य घरेलू दवा है। अमृतांजन की एक शीशी हमेशा पास रखिये। इसके अलावा यह किफायती 'जार' और कम कीमत वाले डिब्बों में भी मिलता है।

अमृतांजन—सर्दी-जुकाम और दर्द के लिये १० दवाओं का एक अपूर्व मिश्रण!

अमृतांजन लिमिटेड

अमृतांजन
जल्द आराम पहुँचाता है!

AM 3586

भारत की सर्वप्रथम और सर्वोत्तम

ज्ञान भारती बाल पॉकेटबुक्स

प्रत्येक पुस्तक 1/- रु०

ज्ञान भारती
घरेलू बाल पुस्तकालय (योजना)

घरेलू बाल पुस्तकालय योजना का सदस्यता शुल्क २.०० रु० भेज कर घर बैठे नियमित रूप से पुस्तकें मंगाइए और नीचे लिखे लाभ उठाइए—

- नये साल की सुन्दर डायरी मुफ़्त
- डाक खर्च मुफ़्त
- हर महीने ज्ञानभारती पत्रिका मुफ़्त !
- साल में एक सेट (६ पुस्तकें) बाल पाकेट बुक्स मुफ़्त !
- ज्ञानभारती पत्रिका में अपने लेख, निबन्ध और कहानियां छपाइए!
- बढ़िया और आकर्षक प्रमाण-पत्र। इसके अतिरिक्त समय-समय पर और भी उपहार और पुरस्कार मिलते हैं। विस्तृत विवरण पत्र लिखकर मगाए !

सम्पूर्ण परिवार के लिये ज्ञानभारती बाल पॉकेट बुक्स

भारतीय बाल साहित्य की अठारहवें सेट की प्रेरक, रोचक, मनमोहक रंगबिरंगी पुस्तकें !

- सुराही में कद्दू
- पाताल के पेट में
- झंग्री वाला
- नकाब पोश लुटेरा
- फांसी का फँदा
- धरती की कसम

मुफ़्त

पिछले सत्रह सेटों की पुस्तकों का विवरण और ज्ञानभारती पत्रिका पत्र लिखकर मुफ़्त मंगाइए !

*

ज्ञानभारती घरेलू बाल पुस्तकालय योजना,
विशेश्वरनाथ रोड, लखनऊ (उ० प्र०)

advend

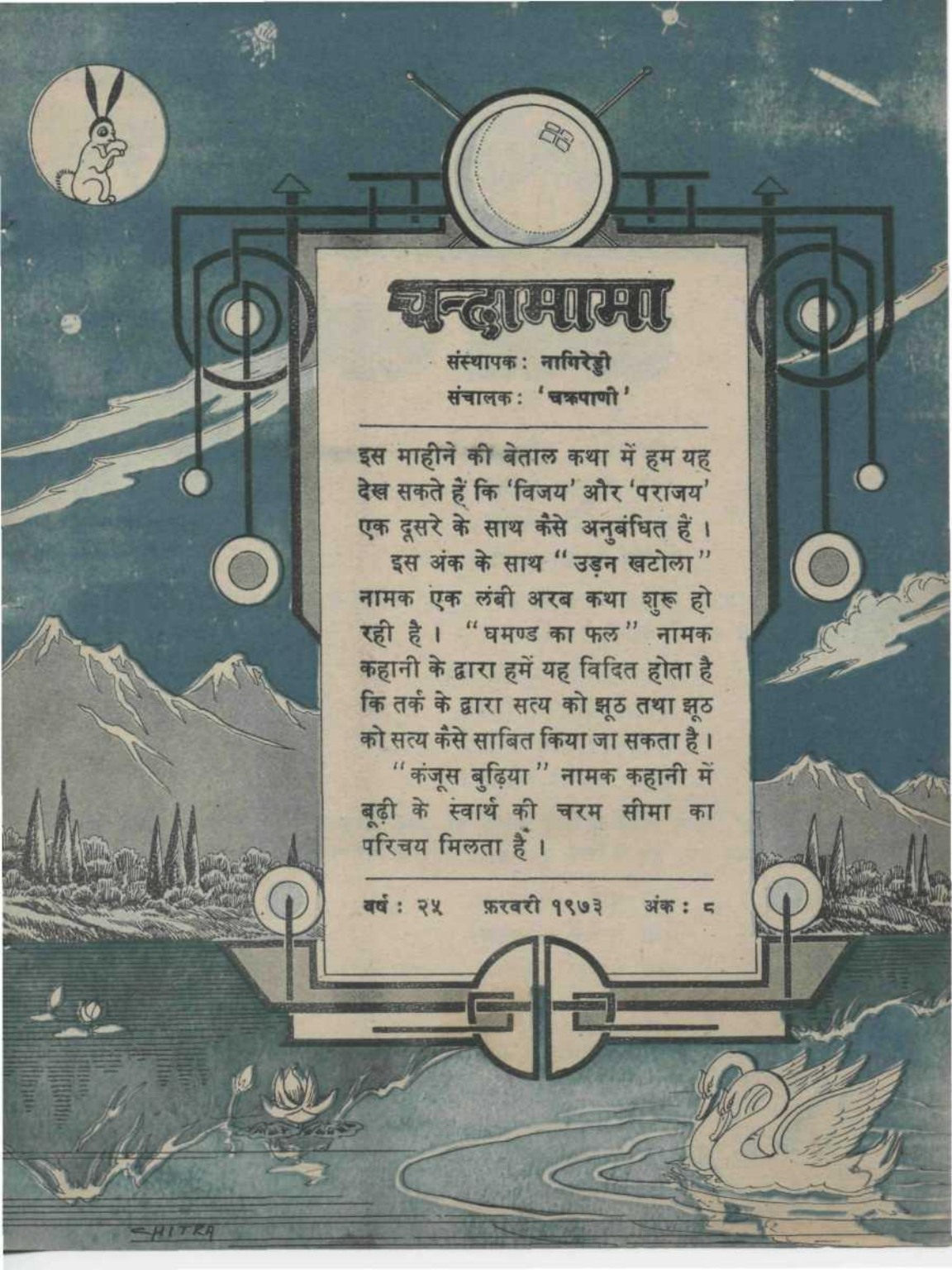

चन्दामामा

संस्थापक : नागिरेड्डी
संचालक : 'चक्रपाणी'

इस माहीने की बेताल कथा में हम यह देख सकते हैं कि 'विजय' और 'पराजय' एक दूसरे के साथ कैसे अनुबंधित हैं।

इस अंक के साथ "उड़न खटोला" नामक एक लंबी अरब कथा शुरू हो रही है। "घमण्ड का फल" नामक कहानी के द्वारा हमें यह विदित होता है कि तर्क के द्वारा सत्य को झूठ तथा झूठ को सत्य कैसे साबित किया जा सकता है।

"कंजूस बुढ़िया" नामक कहानी में बूढ़ी के स्वार्थ की चरम सीमा का परिचय मिलता है।

वर्ष : २५ फ़रवरी १९७३ अंक : ८

CHITRA

घृतेन वर्द्धते बुद्धिः,
क्षीरे णायुष्य वर्द्धनम्,
शाकेन वर्द्धते व्याधिः,
मांसम् मांसेन वर्द्धते । ॥ १ ॥

[घी बुद्धि का विकास करता है, दूध आयु को बढ़ाता है, शाक व्याधि की वृद्धि करता है और मांस मांस को ही बढ़ाता है ।]

अनभ्यासे विषम् शास्त्रम्
अजीर्णे भोजनम् विषम्,
दरिद्रस्य विषम् गोष्ठि,
वृद्धस्य तरुणी विषम् । ॥ २ ॥

[अभ्यास विहीन व्यक्ति के लिए शास्त्र का ज्ञान, बदहजमी रोगी के लिए भोजन, दरिद्र के लिए मनोरंजन तथा बूढ़े के लिए युवा पत्नी जहर के समान हैं ।]

वृथा वृष्ठि स्समुद्रे च,
वृथा तृप्तेच भोजनम्,
वृथा धनवतौ दानम्,
दरिद्रे यौवनम् वृथा । ॥ ३ ॥

[समुद्र के लिए वर्षा, पेट भरने के बाद भोजन, धनवान के लिए दान तथा दरिद्र के लिए यौवन बेकार हैं ।]

उचित, अनुचित, व्यर्थ

अग्नि-परीक्षा

पुरंदर राज्य की राजकुमारी लावण्या सौंदर्य में देवता नारियों की समता रखती थी। उचित वर के प्राप्त होने पर राजा लावण्या का विवाह करना चाहता था। उस जमाने में पुरंदर देश एक कोने में था। उसके चारों तरफ़ भयंकर जंगल फैले हुए थे। उस देश से यदि किसी दूसरे देश में जाना होता तो अनेक दिनों तक जंगलों तथा पहाड़ों से होकर यात्रा करनी पड़ती थी। लावण्या के लिए योग्य वर के न मिलने का यही एक प्रमुख कारण था।

लावण्या भी विवाह करने की इच्छा रखती थी। उसे अपने दैनिक जीवन में किसी प्रकार का आनंद प्राप्त नहीं होता था। राजमहल में उसकी दासियाँ भी उसके मनोरंजनार्थ वे ही कहानियाँ बार-बार सुनाती थीं, जिन्हें वे पहले सुना चुकी होती थी। वे ही खेल प्रदर्शित करती थीं, जो इसके पूर्व खेल चुकी होती थीं। इस कारण राजकुमारी के लिए अपना समय काटना बड़ा मुश्किल मालूम होता था।

एक दिन राजकुमारी राजमहल में किसी से कहे बिना राजधानी की उत्तरी दिशा में स्थित जंगलों में अकेली चली गयी। वह किन्हीं विचारों में खोयी चलती गयी और एक अद्‌भूत उद्यान में जा पहुंची। उसे चतुर्दिक अत्यंत सुंदर झाड़ और उनमें अपूर्व पुष्प दिखाई दिये। ऐसे फूल या पौधे लावण्या ने कभी देखे न थे। वह उद्यान मानव निर्मित प्रतीत नहीं होता था और न वह प्रकृति सिद्ध उद्यान ही लगता था। वहाँ पर किसी के संचार करने के लक्षण भी नज़र नहीं आये। आखिर उसे जानवर और पक्षी भी दिखाई नहीं दिये। वह एकदम विस्मय में आ गयी।

विश्वम्भरनाथ शर्मा

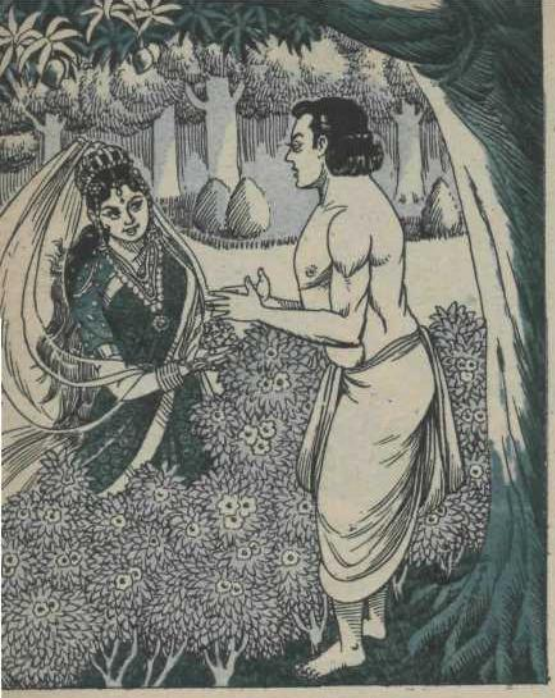

लावण्या प्रत्येक पौधे के पास जाकर उसके फूलों के सौंदर्य और उनकी ख़ुशबू देख प्रसन्न होने लगी। एक पौधे पर उसे सबसे सुंदर फूल दिखाई दिये। उनकी सुगंधी वर्णन के बाहर थी। वह कुतूहलवश एक फूल तोड़ कर वेणी में गूँथने को हुई।

"फूल तोड़नेवाली कौन है वह?" ये शब्द कहते एक युवक पौधे की आड़ में से लावण्या के सामने आया। उसे देखते ही उस युवक के मन में एक विचित्र परिवर्तन आया। वह कुछ कहने को हुआ। पर चुपचाप वह उस युवती की ओर देखता ही रह गया।

"मैं नहीं जानती थी कि फूल तोड़ना मना है। पूछने के लिए भी यहाँ पर कोई दिखाई नहीं दिया। मैंने सोचा कि यहाँ पर कोई नहीं है।" लावण्या ने जवाब दिया।

युवक ने मुस्करा कर कहा—"हाँ, हाँ, यहाँ पर कोई नहीं रहता। मैं ही अकेले इस उद्यान का पहरा देते यहीं पर रहता हूँ।" ये शब्द कहते उसने उसी पौधे से थोड़े और फूल तोड़ कर लावण्या के हाथ में रख दिये।

"आपने अभी कहा था कि फूल तोड़ना मना है?" लावण्या ने पूछा।

"तुम जैसी सुंदरी के लिए ये नियम आवश्यक नहीं हैं।" युवक ने जवाब दिया।

"आप कौन हैं?" लावण्या ने पूछा।

"मेरा नाम सुव्रत है। मैं इस गंधर्व वन का रक्षक हूँ।" सुव्रत ने उत्तर दिया।

सब की भांति लावण्या को गंधर्वों से डर था। साधारण मानवों के लिए उनकी मैत्री लाभदायक नहीं होती। गंधर्व तो अनेक विद्याओं में पारंगर होते हैं। पर लावण्या यह नहीं जानती थी कि गंधर्व उसके देश के निकट में ही हैं।

लावण्या को घबराये हुए देख सुव्रत ने कहा—"राजकुमारी, डरो मत। मैं फिलहाल गंधर्वों का सेवक हूँ, मगर मैं जन्मतः तुम

जैसे मानव जाति का हूँ। मेरा नाना पूर्वी दिशा में स्थित जय सिंधु देश के राजा हैं। मेरे बचपन में ही मेरे माता-पिता का स्वर्गवास हो गया है। तब मेरे मातामह ने अपने घर लाकर मुझे पाला-पोसा। बड़े होने पर मैं अपने नाना के साथ इस प्रदेश में शिकार खेलने आया। तब मुझे सक गंधर्व रानी पकड़कर अपने साथ ले गयी। उसका विश्वास था कि मैं उसके साथ प्रेम करके उसके पति बनकर रह जाऊँगा। लेकिन मैं उसके साथ प्रेम नहीं कर सकता। इसलिए उसने मुझे दिन के वक़्त इस उद्यान का पहरा देने का काम सौंप दिया। रात के होते ही वह मुझे अपने लोक में ले जाती रहती है। मुझे इन गंधर्वों और उनके लोक से भी दिन प्रति दिन ईर्ष्या बढ़ती जा रही है। मैं इस आशा से हूँ कि इनके मायाजाल से कोई न कोई मुझे बचा लेगा। मगर मेरी आशा कभी सफल नहीं हो सकती। उसके सफल होने का उपाय नज़रंदाज़ प्रतीत नहीं होता।" यों कहते युवक ने गहरी सांस ली। लावण्या उस युवक की ओर एकटक देखती रही। उसकी हालत पर सहानुभूति दिखाते हुए लावण्या ने पूछा–"वह उपाय कैसा?"

सुवुत ने लावण्या की ओर शंका भरी दृष्टि से देखते हुए यों कहा :

"हर पूर्णिमा की रात को गंधर्वरानी अपने परिवार के साथ आकर इस उद्यान में विहार करती है। मैं उस वक़्त उसके

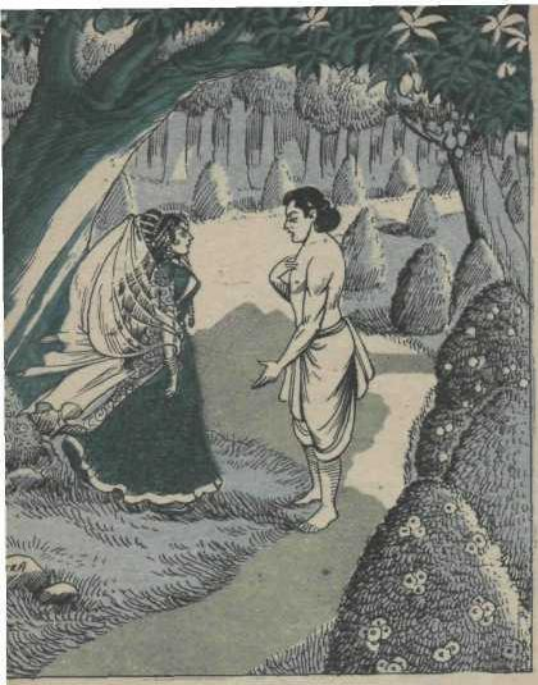

साथ ही रहता हूँ। उस समय कोई मानव-जन्मधारी मेरे साथ आलिंगन करके मुझे छोड़े बिना पकड़े रहना होगा। तब गंधर्वरानी अपनी मायाओं का प्रयोग करके उस व्यक्ति की भयंकर परीक्षाएँ लेगी। उन परीक्षाओं का सामना करते हुए मुझे पकड़े रहना होगा। तभी मैं गंधर्व के जाल से मुक्त हो सकता हूं। मेरे वास्ते इतने कष्ट उठानेवाले को मेरे प्रति कितना प्रेम होना चाहिये। कितना साहस चाहिये। मुझे संदेह होता है कि मुझे जाननेवाला कोई मानवों की दुनिया में है कि नहीं? ऐसी हालत में मेरा यह सोचना केवल भ्रम ही होगा कि मेरी रक्षा करनेवाले भी कोई है।"

ये शब्द कहते सुव्रत ने गहरी सांस ली और कहा—"सूरज डूबने को है। न मालूम तुम्हें कितनी दूर जाना होगा। अंधेरा फैलने के बाद तुम्हारा यहाँ रहना खतरनाक है!"

"तुम शीघ्र ही गंधर्वों से मुक्त हो जाओगे। अच्छा, मैं चली।" यों कहकर लावण्या अपने नगर को लौट गयी।

पूर्णिमा के आने में अभी चार दिन बाक़ी थे। ये चारों दिन लावण्या केवल सुव्रत के बारे में ही सोचती रही। उसकी रक्षा करने तथा आवश्यकता पड़ने पर इस प्रयत्न में अपने प्राण तक देने का लावण्या ने निश्चय कर लिया।

पूर्णिमा की शाम को लावण्या अकेली गंधर्व वन में आ पहुँची। वह काले वस्त्र धारण कर चुकी थी, ताकि वह किसी को दिखाई न दे। अंधेरा फैलने के पहले ही वह पौधों के बीच छिप कर बैठ गयी और अपने बालों से चेहरे को ढक लिया।

रात के गहरी हो जाने पर उद्यान में कोई आहट हुई और गंधर्वों की जोड़ियाँ उद्यान में टहलने लगीं। झाड़ी में बैठे लावण्या हर जोड़ी को ध्यान से देख रही थी।

लगभग आधी रात के समय सुव्रत तथा एक और नारी उस प्रदेश में आ पहुँचे।

लावण्या ने बड़ी आसानी से समझ लिया कि सुव्रत के साथ रहनेवाली गंधर्व रानी होगी । उस जोड़ी के निकट आते ही लावण्या ने सुव्रत के साथ कसकर आलिंगन कर लिया ।

गंधर्व रानी पल भर के लिए चकित रह गयी । उसने सोचा कि सुव्रत उसके हाथ से निकलता जा रहा है, यह सोचकर उसने अपनी मायाओं का प्रयोग किया ।

लावण्या के आलिंगन में रहनेवाला सुव्रत तुरंत एक अजगर के रूप में बदल गया । लेकिन लावण्या ने अपने आलिंगन को ढीला नहीं किया । इतने में अजगर एक सिंह के रूप में बदल गया । सिंह को देख लावण्या कांप उठी, फिर भी उसने सिंह के साथ आलिंगन किया ।

इतने में सिंह एक जलनेवाले कुदाल के रूप में परिवर्तित हो गया । लावण्या का शरीर जल उठा । उसे असहनीय पीड़ा हुई । फिर भी लावण्या ने दांत भींचकर कुदाल को जकड़ लिया, पर अपनी पकड़ ढीली नहीं की ।

इसके बाद क्या हुआ, वह नहीं जानती । जब वह होश में आयी, तब गंधर्व वन में कोई न था । उसके आलिंगन में सुव्रत जकड़ा हुआ था । उसी के साथ सुव्रत भी होश में आया ।

"तुम ने गंधर्व रानी से मेरी रक्षा की । मैं तुम्हारा ऋण कैसे चुका सकता हूँ? चलो, हम तुम्हारे नगर में चले चलेंगे । तुम को घर पहुँचाने के बाद ही मैं अपने बारे में कुछ सोच सकता हूँ ।" सुव्रत ने लावण्या से कहा ।

राजकुमारी को न पाकर उधर राजमहल में सब व्याकुल थे । लावण्या ने राजमहल में पहुँच कर सारी बातें पिता से कह सुनायीं । इस पर राजा ने सुव्रत से कहा–"तुम्हारे वास्ते मेरी पुत्री ने अग्नि परीक्षा दी वे । इसलिए तुम से बढ़ कर इसका पति और कौन हो सकता हैं?" यों कहकर राजा ने उन दोनों का विवाह किया ।

अछूत

कावेरी के तट पर एक गाँव में कांचनशर्मा नामक एक नैष्ठिक ब्राह्मण रहा करता था। वह बड़ा ही क्रोधी था। उस गाँव में एक ज्ञानी तथा साधू स्वभाव का माधो नामक एक अछूत भी था।

एक त्योहार के दिन सवेरे गाँव के सभी लोग कावेरी में स्नान करने पहुँचे। कांचनशर्मा नदी में स्नान समाप्त करके अपने घर लौट रहा था। तभी माधो भी सर सुकाये नहाकर चलते हुए उसकी बगल में से गुजरा। तब माधो का गीला वस्त्र कांचनशर्मा को छू गया।

कांचनशर्मा ने गुस्से में आकर दांत किटकिटाते माधो को गालियाँ दीं। माधो ने इस बात के लिए माफ़ी मांगी कि धुंधले अंधेरे में न देख सकने के कारण उससे भूल हो गयी और उसने साष्टांग दण्डवत भी किया। तब भी कांचनशर्मा का क्रोध शांत न हुआ। उसने माधो के सर पर चार पांच लातें मार दी और अछूत को छूने के अपराध में फिर नदी में स्नान किया।

कांचनशर्मा के स्नान करते देख माधो भी फिर नदी में जाकर नहाने लगा। इस पर शर्मा ने माधो से पूछा–"अछूत को छूने के कारण मैंने स्नान किया, पर तुम फिर क्यों नहाते हो?"

इस पर माधो ने जवाब दिया–"क्रोध नामक अछूत एक साधारण अछूत से भी नीच होता है। इसलिए उसके स्पर्श से अपने को पवित्र बनाने के लिए मैं नहा रहा हूँ।"

यक्ष पर्वत

[८]

[खड्गवर्मा तथा जीवदत्त मांत्रिक और जटाधारी भूत को मार-पीट कर शिथिल भवनों में घुस पड़े। वहाँ पर पुजारिणी के सेवकों ने उन्हें बन्दी बनाया। पुजारिणी ने उन्हें एक अंधेरी कोठरी में डालने का आदेश दिया। खड्ग और जीवदत्त ने बगल के कमरे में स्थित सिंह को पुजारिणी के सेवकों पर उकसाया। बाद ···]

भूख से तड़पनेवाला सिंह भयंकर गर्जन करते पुजारिणी के सेवकों पर टूट पड़ा। इस पर वे चिल्लाते भागने की कोशिश करने लगे, मगर सिंह ने जो भी उसके पंजे में आया, उसे घायल करते दूर फेंक दिया।

खड्गवर्मा और जीवदत्त टूटी दीवारवाले एक कमरे के द्वार पर खड़े हो अट्टहास कर उठे–"अरे पुजारिणी के भृत्यो, लगता है, तुम लोगों ने सिंह को चार-पांच दिन से खाना नहीं दिया। इसलिए वह तुम लोगों की जान पर खेल रहा है। पहले तुम में से कोई एक सामने आकर उसका आहार बन जाओ, तब कम से कम बाक़ी लोग तो बच जायेंगे।"

पुजारिणी के सेवक ये बातें सुनने की हालत में नहीं थे। उन में चार-पांच व्यक्ति सिंह के पंजों के वार से घायल

होकर जमीन पर तड़प रहे थे। एक व्यक्ति सिंह के मुँह में फँस कर चिल्ला रहा था। घायल होने से बचे हुए पांच-छे आदमी एक टूटी दीवार पर खड़े हो जान के डर से थर-थर कांप रहे थे।

सिंह ने एक बार चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी, वह किसी को खाने के बदले जल्दी जंगल में भाग जाने के लिए आतुर सा लगता था।

जीवदत्त ने सिंह की ओर अपना दण्ड दिखाकर कहा—"सिंहराज! शायद तुम यह सोचकर किसी को खाने में संकोच करते हो कि सबके सामने खाने से नज़र लग जायगी। देखो, बाजू में ही नीचे जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। उस रास्ते से जाकर शिथिल भवनों में पहुँच जाओ और वहाँ से जंगल की ओर भाग जाओ।" यों कहते ज्यों ही सिंह की ओर उसने दो-चार क़दम आगे बढ़ाये, तब उसे सीढ़ियों की ओर घुमाने के लिए दण्ड को हिलाया।

सिंह ने गुर्राते हुए जीवदत्त पर हमला करना चाहा। वह अपने आगे के दो पैरों को उठाकर, पीछे के पैरों पर खड़ा हो गया और छलांग मार कर कूदने को हुआ, तभी जीवदत्त ने बड़े ही कौशल के साथ सिंह के पेट के नीचे दण्ड को टिका कर ज़ोर से बगल की ओर ढकेल दिया। उस धक्के से सिंह नीचे जा गिरा, लुढ़कते-लुढ़कते सीढ़ियोंवाले कमरे के द्वार पर आड़े जा गिरा।

"सिंहराज! अब उठकर खड़े हो जाओ। पुंजारिणी के अपने सेवकों के साथ यहाँ पहुँचने के पहले ही तुम सीढ़ियाँ उतर कर भाग जाओ, इसी में तुम्हारी ख़ैरियत है।" जीवदत्त ने दण्ड उठाकर सिंह की ओर बढ़ते कहा।

टूटी दीवार पर बैठे इस दृश्य को देखनेवाले पुजारिणी के सेवकों को इस बात का आश्चर्य हुआ कि जीवदत्त ने कैसी हिम्मत के साथ सिंह का सामना किया

और दण्ड के वार से कैसे उसे लुढ़का दिया। उन में से एक व्यक्ति हाथ जोड़ कर जीवदत्त को प्रणाम करते बोला–"महा मांत्रिक शिरोमणि! मेरे नमस्कार स्वीकार करो। तुम्हारी मंत्रशक्ति साधारण लोगों को प्राप्त होनेवाली नहीं है। महाशक्ती पुजारिणी का वध करके तुम ही इस शिथिल नगर पर शासन क्यों नही करते? तब हम सब तुम्हारे शिष्य बनकर तुम्हारी सेवा करते आराम से जियेंगे। हमें पुजारिणी की यातनाओं से छुट्टी मिल जायगी और एक नारी के अनुचर बने रहने की अपेक्षा एक महावीर के सेवक बने रहने में हमारी भी इज्ज़त बनी रहेगी।"

उसके मुँह से ये बातें पूरी होने को थीं, तभी उसके साथी "गुरूद्रोह! गुरूद्रोह" चिल्लाते उस पर टूट पड़े। टूटी दीवार पर ही द्वन्द्वयुद्ध शुरू हो गया। एक-दो व्यक्ति पैर फिसल जाने के कारण दीवार पर से नीचे आ गिरे। सीढ़ियों की ओर जाकर उतरनेवाला सिंह भड़क उठा और उन्हें देख गुस्से में आकर गरजते आगे बढ़ने को हुआ।

जीवदत्त ने दण्ड उठा कर क्रोध भरे स्वर में सिंह को डांटा–"तुम सीढ़ियाँ उतर कर अपने रास्ते चले जाओ। नाहक़ पुजारिणी के शिष्यों के झगड़ों में दखल देकर आफ़त में मत फँसो।"

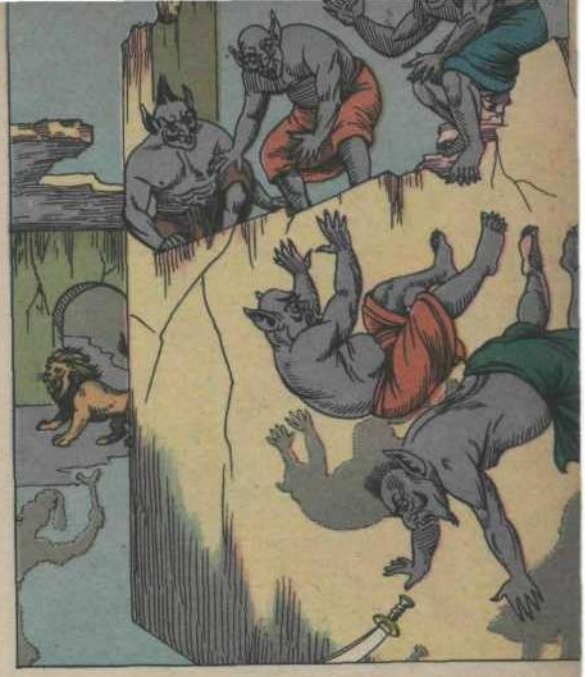

सिंह ने इसके पहले ही दो बार दण्ड की मार का अनुभव किया था, इसलिए जीवदत्त के हाथ में दण्ड देख गुर्राते हुए सीढ़ियोंवाले कमरे का द्वार पार कर चला गया।

खड्गवर्मा तब तक मौन हो देखता रहा, अब उससे रहा न गया। वह बोला–"जीवदत्त! हम भी यहाँ क्यों रहे? पुजारिणी के शिष्य आपस में लड़ रहे हैं। इस वक़्त हमें रोकनेवाला कोई नहीं है। हम भी इन शिथिल भवनों को छोड़ जंगल में चले जायेंगे।"

"अच्छी बात है! हम भी सिंह जिस रास्ते से गया, उसी रास्ते से जाकर देख

लेंगे, कहीं गुफा का द्वार मिल जाय।" यों कहते जीवदत्त चल पड़ा।

खड्गवर्मा का यह सोचना गलत था कि उन शिथिल भवनों में उनका सामना करनेवाला कोई नहीं है। क्यों कि पुजारिणी को अपने एक सेवक के द्वारा तत्काल ही मालूम हो गया था कि खड्गवर्मा तथा जीवदत्त मुक्त हो गये हैं और सिंह ने गरजते पुजारिणी के कुछ सेवकों को घायल भी कर दिया है।

यह समाचार भाग कर आये हुए एक सेवक के द्वारा मालूम होते ही पुजारिणी ने आँखें लाल करते हुए कहा–"हे महाभूत! यह कैसी विचित्र बात है? बूढ़े पुजारी जैसे महान व्यक्ति को भी मैं ने अपने मंत्र के प्रभाव से हराकर अंधेरी कोठरी में बंद किया है। ऐसी महान शक्तियाँ रखनेवाली मुझपर दो साधारण मानव हमला करने आये। मेरे ही राज्य में घुसकर मेरे शिष्यों को घायल करके मेरा अपमान करना कैसी बदतमीज़ी है? मैं इसे सहन नहीं कह सकती। अरे कमबख्त सेवको! मुझे दिखा दो, वे मानव कहाँ पर हैं? मैं उन्हें बन्दी बना डालूंगी।"

पुजारिणी के दो शिष्यों ने अपनी आँखों से देख लिया था कि खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने सिंह को कैसे थर्रा दिया और इसके पूर्व मांत्रिक और जटाधारी भूत को कैसे सताया था, इसलिए उस की कल्पना करते ही वे कांप उठे और बोले–"महाशक्ती पुजारिणीजी! वे दोनों मानव बड़े ही मांत्रिक मालूम होते हैं! उन्होंने हमारे दरबारी मांत्रिक तथा जटाधारी भूत को..."

सेवक के मँह से ये बातें पूरी भी हो न पायी थीं कि पुजारिणी ने उन में से एक की पीठ पर शूल से चुभोते गरज कर कहा–"मुँह बन्द करो कायर कमवख्त! मैं उन दोनों को अभी बन्दी बनाकर उन्हें महाभूत को बलि देने जा रही हूँ। रास्ते से हट जाओ।" दांत मींचते पुजारिणी आगे बढ़ी।

सेवक सब मन ही मन डरते आगे-आगे चल पड़े। उन सब के आगे मांत्रिक और जटाधारी भूत बड़े बड़े डग भरते चलने लगे।

"गुरू! उन दोनों को पकड़कर मैं खा डालूंगा इस बार!" जटाधारी भूत ने मांत्रिक से कहा।

"अरे शिष्य! ऐसी भूल मत करो। हमारे शिथिल भवन में घुस आये ये नटखट युवक हमारी पुजारिणी को ज़रूर हरायेंगे। मेरा दिल तो यही कहता है। ऐसी हालत में इस शिथिल नगर का राजा मैं बन जाऊँगा और तुम मेरे मंत्री बनोगे, समझे! तब बूढ़े मांत्रिक को अंधेरी कोठरी से मुक्त करके उसके द्वारा हम और कुछ मंत्र-शक्तियाँ प्राप्त कर लेंगे।" मांत्रिक ने धीमे स्वर में कहा।

जटाधारी भूत मांत्रिक की बातें सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ और पीछे मुड़कर देखते हुए बोला–"गुरू, आप राजा और मंत्री मैं! यह तो बड़ा अच्छा है?"

पुजारिणी और उसके अन्य शिष्य काफ़ी पीछे आ रहे थे। पुजारिणी ने अपने शिष्यों को आदेश दिया कि वे शिथिल भवनों की खोज करके उन युवकों का पता लगावे। मगर उस वक़्त खड्गवर्मा तथा जीवदत्त शिथिल भवनों के एक दूसरे प्रदेश में पहुँचकर वहाँ से बाहर आ गये और

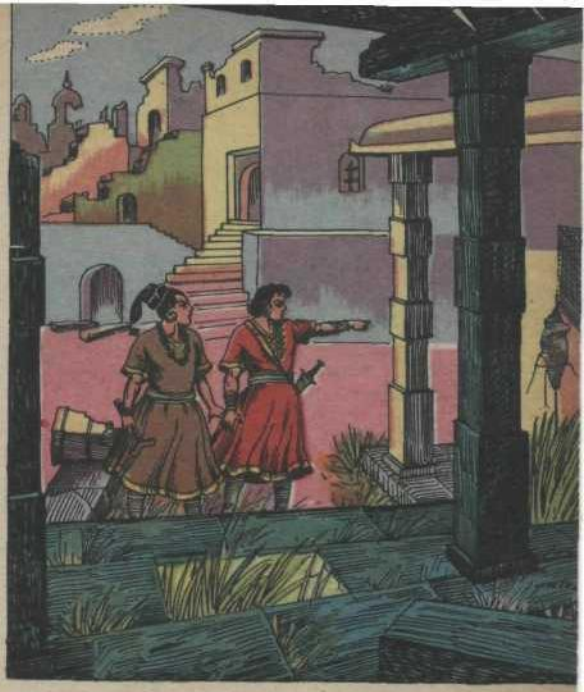

पुनः जंगल में जानेवाले रास्ते की खोज करने लगे। लेकिन वे जिस सुरंग मार्ग से शिथिल नगर में पहुँच गये थे, उसका पता वे नहीं लगा पाये।

"खड्गवर्मा! हम जिस रास्ते से इस शिथिल नगर में आये, उस रास्ते से बाहर जाने का कोई आसार दिखाई नहीं देता। पुजारिणी के किसी एकाध शिष्य को पकड़कर उसके द्वारा हमें बाहर जाने का रास्ता जानना होगा। इसके अतिरिक्त कोइ दूसरा उपाय दिखाई नहीं देता।" जीवदत्त ने कहा।

"लगता है कि हम पुजारिणी के शिष्यों को चकमा देकर काफ़ी दूर आ गये हैं।

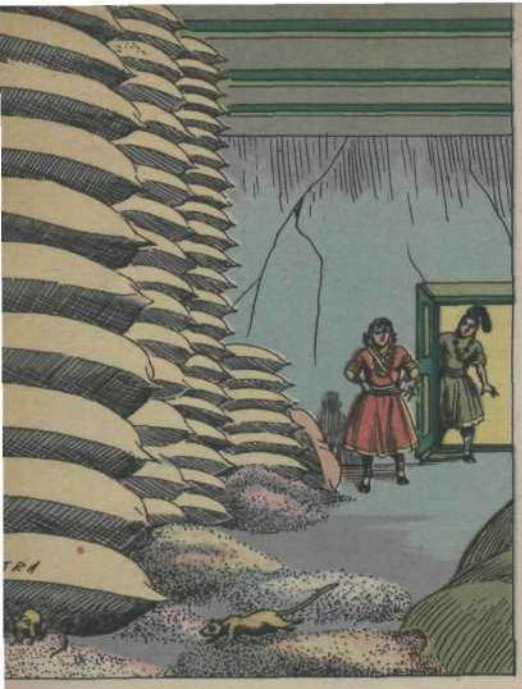

उस सिंह का न मालूम क्या हो गया? क्या वह इन शिथिल भवनों को पार कर जंगल में तो नहीं पहुँच गया?" खड्गवर्मा ने पूछा।

"शायद वह भी हम जैसे यहीं कहीं फ़ँस गया होगा! क्या तुम्हें रह-रह कर सिंह के गर्जन सुनाई नहीं दे रहे हैं?" यों कहते जीवदत्त ने शिथिल भवन के एक कमरे में झांक कर देखा और कहा– "खड्गवर्मा, यहाँ पर आ जाओ! इन दुष्टों ने रास्ता चलनेवाले व्यापारियों को लूट कर धान के कितने बोरे इस कमरे में जमा किये हैं। देख तो लो। इनका धंधा ही यही मालूम होता है।"

खड्गवर्मा ने भी उस कमरे में झांक कर देखा। कमरे में क़रीने से एक के ऊपर एक सजाये बोरे उसे दिखाई दिये। उन में से कुछ बोरे फट गये थे जिन से हो कर धान, ज्वार और गेहूँ के दाने निकल आये थे।

"इस का मतलब है कि जटाधारी भूत का प्रयोग करके मांत्रिक तथा उस के अनुचर रास्ते चलनेवाले को डरा कर खाने के पदार्थों का अपहरण कर रहे हैं? पुजारिणी तो बड़ी अक़्लमंद मालूम होती है। ये सभी करतूतें उसकी चाल होंगी!" खड्गवर्मा ने कहा।

"इस अनाज में से एक भी दाना पुजारिणी के दल के हाथ न लगे। ऐसा कोई उपाय हमें करना होगा। तब जाकर ये लोग भूखों मर जायेंगे और उन्हें अपनी जीविका के लिए इन शिथिल भवनों को छोड़ बाहर जाना पड़ेगा।" जीवदत्त ने कहा।

"हम दोनों के मन में एक ही विचार आया।" ये शब्द कहते खड्गवर्मा हंस पड़ा और अपने कपड़ों में से चकमक पत्थर निकाल कर रूई पर जलाया। उस में से आग के निकलते ही अनाज के बोरों को जलाया।

खड्गवर्मा और जीवदत्त कमरे के सामने खड़े हो देख रहे थे। धीरे-धीरे कई

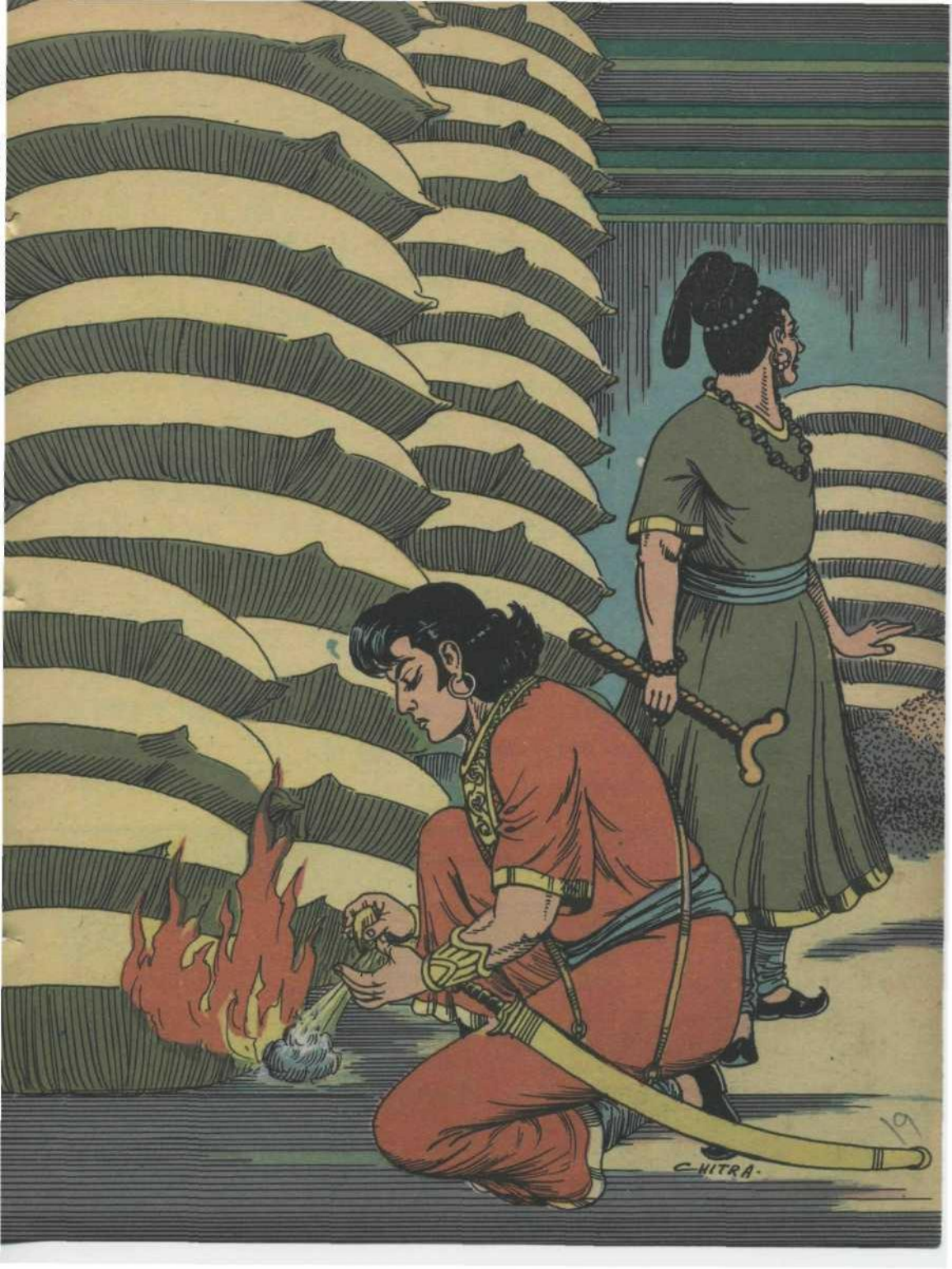
19
CHITRA.

बोरों में आग लग गयी। अनाज के दाने जल कर हवा में उछलते किवाड़ के पास आ गिरने लगे।

"ये लाजे खाकर ये दुष्ट और थोड़े दिन तक इन शिथिल भवनों में वास करेंगे। अब क्या किया जाय?" खड्गवर्मा ने पूछा।

"थोड़ा और ठहर जाओ। लपटें प्रज्वलित हो जायेंगी तो इनमें सारा अनाज जल कर राख हो जायगा। लेकिन तब खतरा यह पैदा हो जायगा कि इन लपटों को देख पुजारिणी और उसके अनुचर यहाँ पर आ धमकेंगे! तब....."

जीवदत्त के मुँह से ये बातें पूरी न हो पायी थीं कि अनाज के बोरों के जलनेवाले कमरे के बाजू के कमरे में से किसी मानव का कंठ आर्तनाद करते सुनाई दिया।

"खड्गवर्मा, बगल के कमरे के दर्वाज़े बंद किये हुए हैं। भीतर से कोई चिल्ला रहा है।" यों कहते जीवदत्त कमरे के पास पहुँच कर दर्वाजों पर ज़ोर से आघात करने लगा।

खड्गवर्मा उसके निकट जाकर हंसते बोला–"जीवदत्त, इस हलचल में तुमने शायद दर्वाज़े पर लगे बड़े ताले को भी नहीं देखा है। तुम अपने मंत्र दण्ड से इसे तोड़ डालो।"

इसके तुरंत बाद जीवदत्त ने अपने दण्ड से किवाड़ों पर लगे ताले पर ज़ोर से दे मारा। ताला टूट कर नीचे जा गिरा। चटखनी हटा कर किवाड़ों को खड्गवर्मा ने पीछे ढकेल दिया।

कमरे में घना अंधेरा तो न था, दीवार की ऊँचाई में स्थित एक छोटे से गवाक्ष से रोशनी आकर कमरे में फैल रही थी। उस रोशनी में दीवार में गाढ़े खूँटों पर जंजीरों से बांधा एक वृद्ध दिखाई पड़ा। वह आजानुबाहु था, पर दुर्बल था। उसकी सफ़ेद लंबी दाढ़ी हवा के झोंकों से फहरा रही थी।

(और है)

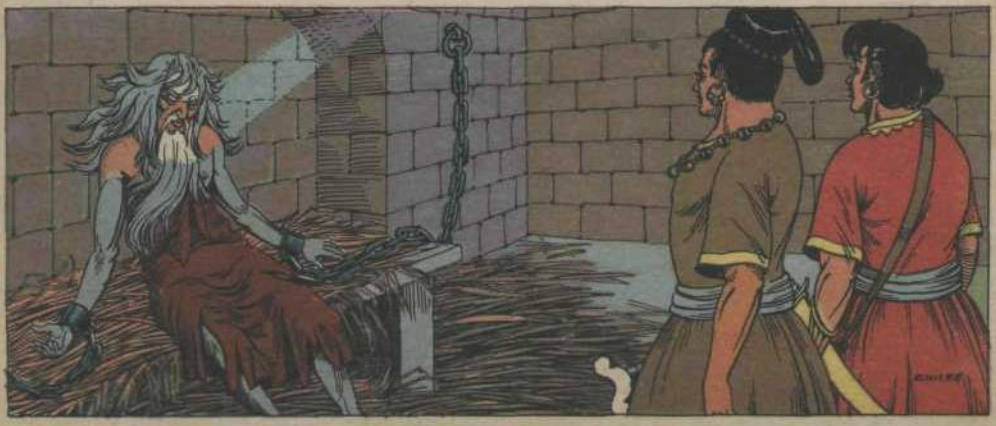

प्राणदान

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ पर से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, बहुत समय पूर्व माधव ने पराये लोगों की सहायता की, मगर अपने लोगों की नहीं की। इसी भांति तुम भी पराये लोगों के वास्ते तो श्रम नहीं उठा रहे हो? श्रम को भुलाने के लिए मैं तुमको माधव की विचित्र कहानी सुनाता हूँ, सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: पिनाकिनी नदी के तट पर माधव नामक एक संपन्न परिवार का युवक था। वह अत्यंत लाड़-प्यार से पाला-पोसा गया था। इसलिए वह कठिनाइयों से घबराता था। आखिर वह अपने गुरु के पास विद्याभ्यास करने का कष्ट भी उठाना नहीं चाहता था।

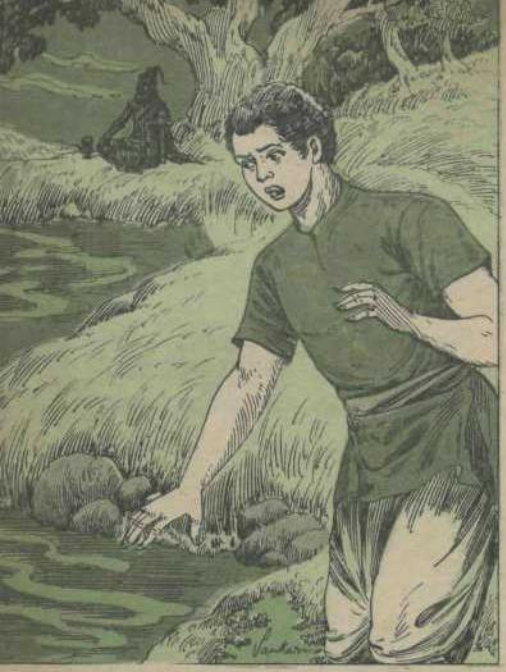

इसलिए वह शिक्षित भी नहीं हो सका। जमीन-जायदाद की कोई कमी न थी। इसलिए माता-पिता ने भी उसकी पढ़ाई पर विशेष ज़ोर नहीं दिया और उसे पूर्ण स्वेच्छा दे दी।

माधव जब विवाह के योग्य हुआ तब उसका मन शहरी जीवन के लिए ललचाने लगा। उसने अपने माता-पिता को मनवाकर गाँव की सारी जमीन-जायदाद बेच डाली और उस धन को लेकर विक्रमसिंहपुरी जा पहुँचा। वहाँ पर उसने एक अच्छा मकान खरीदा, बाक़ी धन से व्यापार करना चाहा। इस के लिए उसने बहुत सारा माल भी खरीदा।

मगर बदक़िस्मती से एक रात को अचानक उसका मकान जल कर राख हो गया। माधव किसी तरह आग की लपटों में से बाहर आया। लेकिन उसके माता-पिता और सारा माल भी जल गये। धनी माधव अब भिखारी बन गया। भीख मांगने के सिवाय माधव के सामने जीने का कोई रास्ता न था।

माधव भीख मांगकर दिन काटना नहीं चाहता था। इसलिए उसने नदी में कूदकर आत्महत्या करनी चाही। इस विचार से एक दिन आधी रात को वह पिनाकिनी नदी के किनारे चला गया।

उस अंधेरे में एक पेड़ के नीचे बैठे हुए एक आदमी ने उससे पूछा–"बेटा, तुम कौन हो? क्या करने जा रहे हो?"

माधव उस पेड़ के पास गया। वहाँ पर उसे एक मुनि दिखाई दिया। माधव उसे अपनी सारी कहानी सुनाने को हुआ। मगर मुनि ने उसे रोकते हुए कहा–"मैं तुम्हारी सारी कहानी जानता हूँ। इस दुनिया में कैसे जीना है, यह न जानने की वजह से तुम नदी में कूदकर प्राण त्याग करना चाहते हो। लेकिन तुम्हारा प्रयत्न सफल न होगा।"

"किसलिए महात्मन?" माधव ने आश्चर्य में आकर पूछा।

"तुम्हारी आयु सौ वर्ष की है। सौ वर्ष पूरा होने तक मौत तुम्हारे पास तक न पटकेगी।" मुनि ने जवाब दिया।

यह बात सुन कर खुश होने के बदले माधव घबरा कर बोला–"मैं यह भी नहीं जानता कि एक जून का खाना कैसे जुटाऊँ? ऐसी हालत में मैं सौ वर्ष कैसे काटूँ? मेरे लिए ज़िंदगी नरक के समान है। महात्मन, क्या सौ वर्ष नरक का अनुभव मुझे भोगना ही पड़ेगा?"

मुनि ने थोड़ी देर तक सोच कर कहा–"क्या तुम धन के बिना जी नहीं सकते? यदि तुम धन की ही कामना करते हो तो मैं तुम्हें धन कमाने का उपाय बता देता हूँ। मरे हुए लोगों को तुम अपनी आयु में से जितनी उचित समझे, दे तो वे जीवित हो उठेंगे। इस तरह तुम अपनी आयु में से थोड़ी-बहुत दूसरों में बेच दोगे तो तुम्हें अपार धन मिलेगा। मगर तुम जितना दान करोगे, उतनी ही तुम्हारी आयु कटेगी।"

माधव ने सोचा कि मुनि की बात सच है तो उसकी ज़िंदगी की समस्या हल हो जायगी। यह सोचकर उसने मुनि से मंत्र का उपदेश लिया और अपनी आयु की बिक्री कर जीने के लिए चल पड़ा।

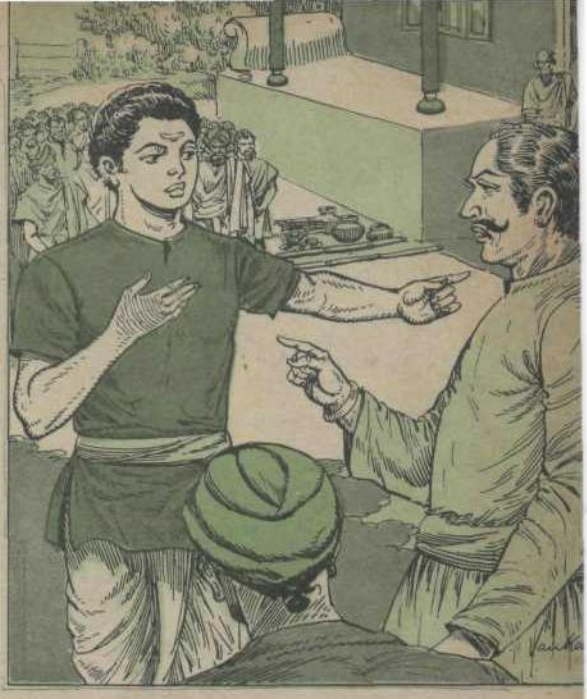

सवेरे तक वह एक गाँव में पहुँचा। गाँव के धनी के घर के पास लोगों की भीड़ लगी थी। पिछली रात को वह धनी दिल की धड़कन की बीमारी से मर गया था।

माधव ने धनी के रिश्तेदारों से मिलकर पूछा–"मैं इस धनी को जिला सकता हूँ, बदले में मुझे क्या दोगे?"

पर पहले किसी ने उसकी बात पर यक़ीन नहीं किया।

"मैं अगर धनी को ज़िंदा नहीं कर पाया तो तुम लोगों का कोई नुक़सान न होगा। यदि जिला दूँ तो मुझे क्या दोगे, बतला दो?" माधव ने कहा।

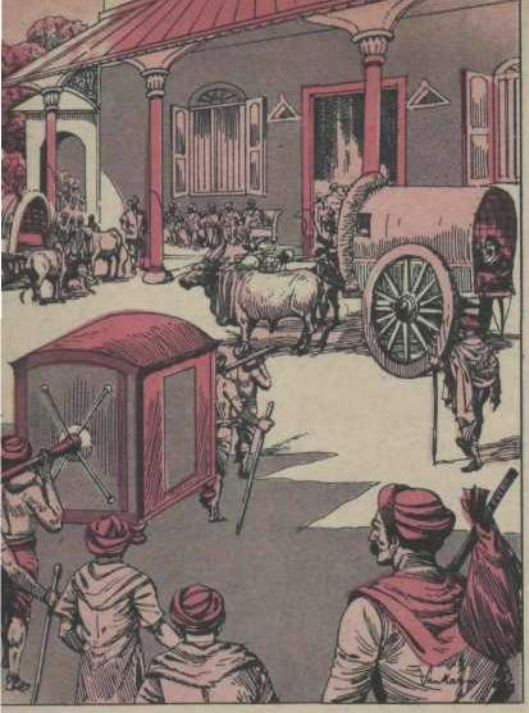

"एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ देंगे। तुम से बन सका नो इनको जिला दो।" धनी के रिस्तेदारों ने कहा।

माधव ने हाथ-पैर धोये। एक बर्तन में पानी लाकर लाश के निकट बैठ गया। मंत्र पढ़ कर मृत व्यक्ति को अपनी आयु में से एक वर्ष की आयु दान कर दी। उसके हाथ से पानी के गिरते ही लाश हिल उठी। थोड़ी ही देर में वह धनी स्वस्थ व्यक्ति की भांति उठ बैठा।

धनी के रिस्तेदारों को खुशी का ठिकाना न रहा। माधव को उन लोगों ने न केवल धन ही दिया, बल्कि वस्त्र, वाहन इत्यादि देकर उसकी पूजा की।

धन लेकर माधव नगर को लौट आया। उसका यश जल्द ही चारों तरफ़ फैल गया। प्रति दिन पालकी तथा गाड़ियों पर उसके घर लाशें आने लगीं। माधव का प्राणदान का व्यापार जोरों के साथ चलने लगा। उसके घर धन की वर्षा होने लगी। गरीब भी उस से प्राणदान की याचना करने लगे।

माधव शीघ्र ही करोड़पति बन बैठा। फिर भी प्राण दान दिन प्रति दिन बढ़ता ही गया। अब वह धन लेकर थोड़े ही दिनों की आयु देने लगा। केवल वही जानता था कि वह कितने दिनों की आयु बेच रहा है। बाक़ी लोग सिर्फ़ यही जानते थे कि मरे हुई व्यक्ति जी रहे हैं।

इस हालत में माधव ने एक योग्य कन्या के साथ विवाह किया। लेकिन शादी के थोड़े ही दिन बाद उस की पत्नी का देहांत हो गया। माधव ने उसे अपनी आयु नहीं दी। उसने शास्त्रविधि से अपनी पत्नी की अंत्येष्ठि क्रियाएँ कीं और दहन-संस्कार कर घर लौट आया।

सब को इस बात का आश्चर्य होने लगा कि अन्य लोगों को जिलानेवाला माधव अपनी पत्नी को जिला नहीं सका। सब ने यही सोचा कि उसकी शक्तियाँ जाती रही हैं।

इसके बाद जो भी माधव के पास शव ले आता, तब उसके निकट रहनेवाले लोग शव लानेवालों से कहते–"अरे, माधव खुद अपनी पत्नी को जिला नही पायाँ, उसे तुम लोग क्यों परेशान करते हो?" ये बातें कह कर उन लोगों को भिजवा देते थे। धीरे धीरे माधव के पास शवों को लाना बंद हो गया। इसके बाद वह लगभग अस्सी वर्ष की आयु तक निश्चित जीवित रहा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन, मेरा एक संदेह है। माधव ने अनेक लोगों को जिलाया, मगर अपनी पत्नी को क्यों जिला नहीं पाया? क्या इस विचार से कि उसे जिलाने से माधव को कोई धन नहीं देगा? या उसके साथ माधव प्यार नहीं करता था? उसे मरने देकर माधव अपनी कीर्ति तथा प्रतिष्ठा को क्यों खो बैठा? इसका समाधान जानते हुए भी जवाब न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा–"माधव ने व्यापार किया था। उसका मूलधन तो उसकी आयु है। वह सीमित है। उसने धन के वास्ते व्यापार किया था। प्रतिष्ठा के लिए नहीं। उसे जब मन चाहा धन मिल गया, तब उसका व्यापार लाभदायक नहीं हुआ। मगर यश उसका व्यापार को रोक नहीं पाया। यश तो उसका शत्रु ही बना। उसके सामने यह स्थिति पैदा हो गयी कि यदि वह अपयश प्राप्त करे तभी वह अपनी आयु की रक्षा कर सकता था। उस हालत में उसकी पत्नी का देहांत हो गया। पत्नी के प्रति प्रेम रखते हुए भी वह प्राण-दान नहीं कर सकता था। वह अधिक समय तक जीवित रहना चाहता था। इसलिए उसे अपनी पत्नी तथा यश को भी त्याग देना पड़ा। वरना प्राण दान के व्यापार के साथ वह भी मृत्यु को प्राप्त हो जाता।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

मूँछ की कीमत

एक गाँव में एक कुलीन धर्मात्मा था। उस गाँव का कोई ऐसा व्यक्ति न था जो उस धर्मात्मा के द्वारा फ़ायदा न उठाया हो। दान-धर्म करते-करते उस धर्मात्मा की सारी संपत्ति समाप्त हो गयी। अब खाने को भी उसके पास कुछ न बचा था, ऐसी हालत में उस धर्मात्मा ने गाँव के एक बनिये के घर जाकर पूछा–"महाशय, मुझे पच्चीस रुपये कर्ज दीजिये। गिरवी रखने के लिए मेरे पास कुछ न बचा है। मेरी मूँछ का एक बाल गिरवी रख कर उधार दीजिये।"

बनिये ने तत्काल उस कुलीन व्यक्ति को कर्ज देकर भेज दिया। इसे देख बनिये के पास काम करनेवाले दीनू मेहता ने बनिये से पूछा–"मालिक, आपने उस कुलीन व्यक्ति की मूँछ के एक बाल के लिए पच्चीस रुपये दिये, मैं अपनी सारी मूँछें दे देता हूँ, मुझे एक सौ रुपये दीजिये।"

"अरे दीनू! अब मूँछों का भाव गिर गया है। एक जमाना था, इस धर्मात्मा ने मेरी मूँछ के एक बाल को सौ रुपये में खरीदा था। इस वक्त मूँछ के बाल का दाम पच्चीस रुपये था। चाहो तो मैं अपनी मूँछों के बालों को दस-दस रुपयों के हिसाब से दे देता हूँ। तुम उन्हें पच्चीस रुपयों में बेचकर लाभ उठाओ।" बनिये ने उत्तर दिया।

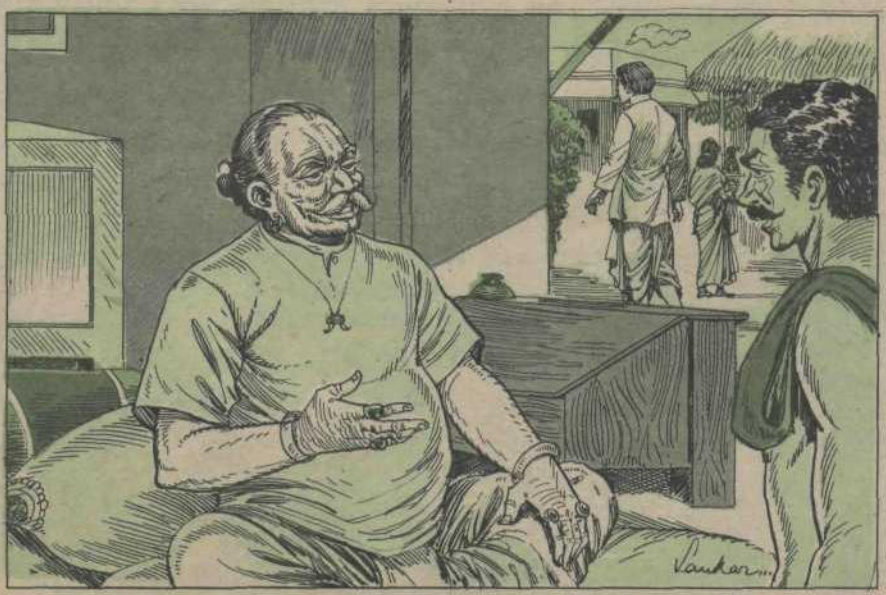

उपाय

ताश्कंड नगर में मीरकमल नामक एक सौदागर था। वह और उसकी औरत खाने के लिए सब कहीं याचना करते थे। उनके कोई संतान न थी। इसलिए रुपये खर्च किये बिना पेट भरने के सिवाय उनके सामने दूसरी कोई समस्या न थी। मीरकमल सप्ताह में छे दिन तिजारत के काम पर घूमता और बुधवार को घर पर रहा करता था।

एक बुधवार के दिन मीरकपल की औरत ने आँसू बहाते हुए अपने मर्द से कहा–"तुम भी कैसे मर्द हो? इस घर में अकेले रहते मेरा दिमाग खराब होता जा रहा है। मेरा वक़्त काटने के लिए तुम कोई बछड़ा-बकरी क्यों नहीं खरीद लाते?"

मीरकमल दो साल की उम्रवाली एक कमज़ोर भेड़ सस्ते में खरीद लाया। अब मीरकमल की औरत जमीरा का वक़्त मजे में कटने लगा। वह भेड़ चौबीसों घंटे चिल्लाती या खांसती रहती। उसके घर के आसपास जो घास थी, सब भेड़ चर चुकी। अड़ोस-पड़ोसवाले जो छिलके फेंकते उन्हें भी खा लेती। पर उसका खांसना और चिल्लाना बंद नहीं हुआ!

दूसरे बुधवार के दिन जब मीरकमल घर लौटा, तब जमीरा ने आँसू बहाते हुए कहा–"तुमने मेरी जान लेने के लिए ही इस भेड़ को खरीद लिया है। मेरा कुछ सालों तक जीना शायद तुम को अच्छा नहीं लगता। या तो तुम इसे कहीं भेज दो या मुझे अपने मायके जाने दो।"

"तुम जल्दबाजी में आकर मत जाओ, मैं इस भेड़ की बात देख लूंगा।" मीरकमल ने अपनी औरत को समझाया।

उसी दिन मीरकमल अपनी मां की कब्र को सलाम करने के लिए कब्रिस्तान में

वनिता राय

गया। वहाँ पर घास खूब लहलहा रही थी। मीरकमल ने मन में सोचा कि उस की भेड़ को इस से बढ़िया चारा और कहीं नहीं मिल सकता। वह जल्दी जल्दी घर लौट आया। अपनी भेड़ को लेकर कब्रिस्तान के पहरेदार के पास जाकर बोला–"भाई साहब, मैं तो बूढ़ा होता जा रहा हूँ, मेरे बाल-बच्चे भी नहीं हैं। जब मुझे अल्लाह बुलायेगा, तब तुम्हें मुझे दफ़नाना होगा। इस के लिए शुल्क देने के लिए मेरे कोई वारिस नहीं है। इसलिए मेहनताना के मद्दे में अभी तुम्हें भेड़ दे देता हूँ।"

कब्रिस्तान के पहरेदार ने मान लिया।

दो महीने बीत गये। एक दिन मीरकमल ने कब्रिस्तान के पास जाकर देखा, वह अपनी भेड़ को पहचान नहीं पाया। वह एक दम मोटी ताजी हो गयी थी।

"इस का वजन दो मन से ज्यादा होगा। इतनी बड़ी भेड़ को दान करना बेवकूफ़ी होगी, इसे किसी तरह ले जाना होगा।" मीरकमल ने मन में सोचा।

इसके बाद वह पहरेदार के घर पहुँचा। सलाम करके बोला–"भाई जान, मेरी ज़िंदगी भी कैसी वाहियात की है। एक लड़का बीमार पड़ा, उसे मैंने आधा चम्मच रस कपूर दिया, वह साला मर गया। इस पर मुझे ताशकंड को छोड़ कर जाने का आदेश हुआ है। तुम भी अपने माल-असबाब लेकर मेरे साथ चलो।"

"मैं क्यों जाऊँ तुम्हारे साथ?" पहरेदार ने आश्चर्य में आकर पूछा।

"कहाँ क्या? मैं जहाँ जाऊँगा, वहाँ चलो। मेरे मरने पर मुझे दफ़नाने के लिए तुमने मान लिया है। इसी के लिए तो मैंने तुम्हें भेड़ दी है।" मीरकमल ने कहा।

"छी:, जहाँ तुम मरना चाहते हो, वहीं तुम और तुम्हारी भेड़ कहीं नदी में कूदकर मर जाओ!" कब्रिस्तान के पहरेदार ने दुतकारते हुए कहा।

मीरकमल की चाल चल गयी थी। इसलिए वह बड़ी खुशी से अपनी भेड़ को लेकर उछलते गाते अपने घर पहुँचा।

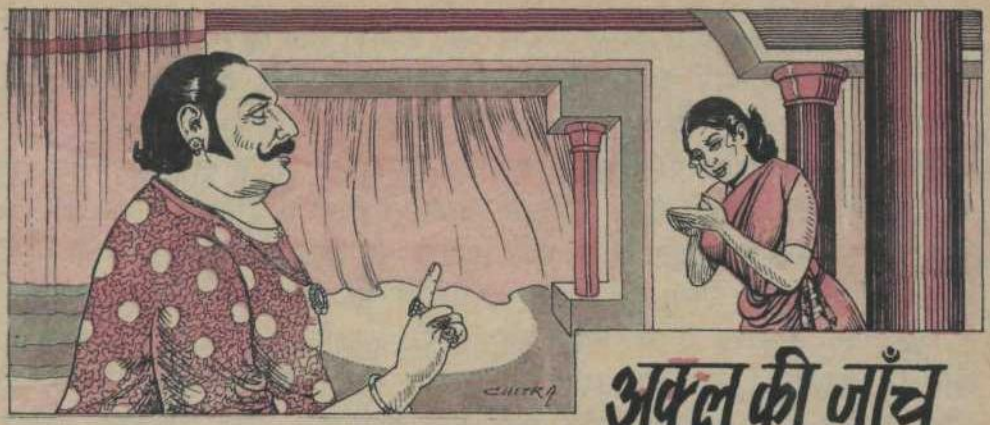

अक्ल की जाँच

एक जमीन्दार के यहाँ रमजोली नामक एक अधेड़ उम्र की औरत दासी का काम करती थी। उसका पति भी जमीन्दार के पास काम करता था, लेकिन कुछ साल पहले उसकी मौत हो चुकी थी।

रमजोली का एक लड़का था हरिदास। वह अक्लमंद था, लेकिन अव्वल दर्जे का आलसी भी था। एक दिन उसने अपने बेटे से कहा–"तुम कोई काम-वाम करना नहीं जानते, ऐसे ही रहोगे तो तुम्हारा भविष्य क्या होगा? कोई काम क्यों नहीं करते?"

हरिदास ने कहा–"माँ, मुझे भी कोई काम दिला दो।"

रमजोली बड़ी खुश हुई, उसने जमीन्दार के पास जाकर यह बात कही। जमीन्दार ने कहा–"तुम कहती हो कि वह कोई काम नहीं जानता, लेकिन तुम पति-पत्नी ने मेरे यहाँ काम किया है, इसलिए उसे बुला लाओ, कोई काम दूंगा।"

दूसरे दिन रमजोली हरिदास को जमीन्दार के यहाँ ले गयी। जमीन्दार ने हरिदास से कहा–"तुम फिलहाल मेरी भैंस चराया करो, लेकिन खबरदार! एक भैंस का दाम पाँच सौ रुपये है। अगर एक भैंस खो गयी तो तुमसे पाँच सौ वसूल करूँगा।" इसके बाद रमजोली से कहा–"तुम्हारे बेटे की जिम्मेदारी तुम पर है।"

रमजोली ने सोचा कि भैंस का दाम पाँच सौ रुपये न होगा, लेकिन ज्यादा दाम बताने से उसका बेटा सावधान रहेगा। इस ख्याल से जमीन्दार ने ज्यादा दाम बताया होगा।

उस दिन से हरिदास जमीन्दार की भैंसें चराने लगा। मगर उसे वह काम बिलकुल अच्छा नहीं लगता था। वह

रामदरश मिश्र

थोड़ा लिखना-पढ़ना, तथा हिसाब करना जानता था। जमीन्दार उसे इससे कोई अच्छा काम दे सकता था, मगर वह नहीं जानता था कि हरिदास थोड़ी-बहुत अक़्ल भी रखता है। यह बात हरिदास जमीन्दार को बताना चाहता था। इसके लिए उसने एक उपाय किया।

एक दिन हरिदास ने जमीन्दार की भैंसों को चराने का काम एक लड़के को सौंप कर उसे थोड़ी जलेबी ख़रीद कर दी। वह एक भैंस को लेकर निकट के गाँव में गया। भैंस की पीठ पर उसने चूने से लिखा–"भैंस का दाम एक रुपया है, जो ख़रीदना चाहते हैं, वे सब शाम को मैदान में आ जाओ।"

एक रुपये देकर भैंस ख़रीदने के ख्याल से लगभग दो हज़ार लोग मैदान में इकट्ठे हो गये। हरिदास ने उन लोगों से कहा–"आप सब भैंस को ख़रीदने आये हैं। मगर एक भैंसे को आप सब में बेचना संभव नहीं, इसलिए चिट निकाल कर जिसका नाम आयेगा, उसको यह भैंस बेचूँगा। जो चिट ख़रीदना चाहते हैं, वे सब एक-एक रुपया मुझे दे दीजिये।"

सब लोगों ने हरिदास को एक-एक रुपया दे दिया। हरिदास ने सब के नाम चिटों पर लिख दिया। उन्हीं लोगों में से एक से चिट निकलवाया, जिसके नाम भैंस आयी, उसको वह भैंस दे दिया और दो हज़ार रुपये लेकर वह अपने मालिक के पास आया और बोला–"मालिक, आपकी भैंस खो गयी, ये रुपये लीजिये।" इन शब्दों के साथ सारे रुपये अपने मालिक के हाथ देकर असली बात बता दी।

जमीन्दार ने अचरज में आकर कहा–"अरे हरिदास, तुम भी अक्ल रखते हो! आगे तुम भैंस मत चराया करो।" यह कहकर हरिदास को जमीन्दार ने थोड़े रुपये पुरस्कार में दिये और उसे हिसाब-किताब देखने का काम सौंप दिया। अपने बेटे की अक़्लमंदी पर रमजोली भी बड़ी ख़ुश हुई।

करनी का फल

कृष्णा नदी के किनारे एक गाँव में गंगादास और जमुनादास नामक दो किसान थे। गंगादास आलसी और धूर्त था। जब कि जमुनादास मेहनती और निर्मल स्वभाव का था। इस वजह से जमुनादास के खेतों में अच्छी फ़सल होती थी। वह धन जोड़ता गया। मगर गंगादास खेतों की ओर झांक कर नहीं देखता था, वह हमेशा आलसियों के संग में अपना वक़्त बरबाद कर देता था।

जमुनादास के पास जब काफ़ी धन इकट्ठा हो गया तब उसने खेत का काम देखने के लिए एक मजदूर को रखा और वह बतखों के अण्डों का व्यापार करने लगा। इस व्यापार में भी उसे खूब नफ़ा होने लगा।

गंगादास को उसके मित्रों ने समझाया– "जमुनादास अण्डों का व्यापार करते खूब फ़ायदा उठा रहा है। तुम्हारे खेतों से ज़्यादा फ़सल भी नहीं होती। इसलिए तुम भी अण्डों का व्यापार क्यों नहीं करते?" गंगादास ने जमुनादास के घर जाकर अण्डों के व्यापार के बारे में सारी बातें जान लीं। गंगादास ने भी बड़ी सहानुभूति के साथ उसे व्यापार के सारे रहस्य बता दिये।

गंगादास ने कुछ बतखें खरीदीं। मगर उन्हें ठीक से पालने की सभ्रता उसमें न थी। इसलिए गंगादास की बतखें ज़्यादा अण्डे भी देती न थीं। पर जमुनादास की बतखें ज़्यादा तंदुरुस्त थीं और अण्डे भी अधिक देती थीं।

दोनों की दुकानें भी साथ साथ थीं। गंगादास अधिक लोभी था, इसलिए जब-तब मौक़ा पाकर जमुनादास की दूकान से अण्डे चुराया करता था।

गीता दत्त

गंगादास रोज़ जमुनादास के अण्डे चुरा लेता था। एक दिन जमुनादास ने गंगादास को चोरी करते रंगे हाथ पकड़ लिया और उसे सचेत किया कि आइंदा कभी चोरी न करे। मगर गंगादास अपनी आदत से मजबूर था।

एक दिन जमुनादास ने न्यायाधिकारी के पास जाकर शिकायत की कि गंगादास ने उसकी दूकान से बीस अण्डे चुरा लिया हैं। गंगादास ने बताया कि वे सारे अण्डे उसके बतखों के दिये हुए हैं। चोरी साबित नहीं हुई। इसलिए न्यायाधिकारी ने जमुनादास के अभियोग को रद्द कर दिया।

जमुनादास सोच में पड़ गया। तब उसकी औरत ने समझाया–"तुम चिंता में पड़े रहोगे तो फ़ायदा ही क्या है? उस वमबख्त चोर को सजा दिलाने का कोई उपाय सोच लो।"

"मैं ने बहुत सोचा, लेकिन मुझे कोई उपाय सूझ नहीं रहा है?" जमूनापास ने जवाब दिया।

"हमारे मामा गणपति मंत्र-तंत्रों के लिए मशहूर हैं। उनसे कोई सलाह ले लो।" जमुनादास की पत्नी ने सुझाव दिया।

"अच्छी वात है, कल सुबह जाकर उनसे बात करूँगा।" जमुनादास ने कहा। दूसरे दिन सवेरे जमुनादास ने गणपति के पास जाकर अपनी समस्या बता दी।

गणपति थोड़ी देर सोचता रहा और बोला–"जमुनादास, मेरे कहे मुताबिक़ करोगे तो चोर आसानी से पकड़ा जायगा।" यों कहते उसने जमुनादास को एक उपाय बताया।

गणपति के यहाँ से घर लौटते रास्ते में एक दूकान से कोई चीज़ें खरीदीं, घर लौटकर कमरे में अकेले कुछ करने लगा।

जमुनापास को अपने अण्डे लेकर दूकान में पहुचने में थोड़ी देरी हो गयी। उसने दूकान खोल दी। अण्डेवाली टोकरी को दूकान में रख कर पानी पीने के बहाने बाहर चला गया। उसके लौटने के जन्दर गंगादास ने कुछ अण्डे चुरा लिये थे।

जमुनादास ने लौटकर जान लिया कि उसके अण्डों की चोरी हो गयी है। वह चिल्ला उठा–"चोर, चोर!" उसकी चिल्लाहट सुनकर उधर से गुजरनेवाला एक सिपाही वहाँ आ पहुँचा। उसने जमुनादास से पूछा–"क्या हुआ है भाई?"

"इस गंगादास ने मेरे अण्डे चुराया है।" जमुनादास ने शिकायत की।

"छी छी! यह तो सफ़ेद झूठ है।" गंगादास ने कहा।

"जमुनादास, तुमने इसी प्रकार एक बार शिकायत की। पर चोरी साबित नहीं कर पाये!" सिपाही ने कहा।

"मैं इस बार साबित करूँगा।" जमुनादास ने जवाब दिया।

गंगादास और जमुनादास अपने अपने माल के साथ सिपाही के पीछे अदालत में गये। जमुनादास को देख न्यायाधिकारी ने पूछा–"तुम फिर आ गये?"

"साहब, जमुनादास कहते हैं कि गंगादास ने इनके अण्डे चुराये हैं।" सिपाही ने न्यायाधिकारी से कहा।

"इसका क्या सबूत है?" न्यायाधिकारी ने जमुनादास से पूछा।

"गंगादास कच्चे अण्डे बेचता है। आप ही फ़ैसला कीजिये कि उसकी टोकरी में पकाये गये अण्डे कहाँ से आये? आज मैं जानबूझ कर पकाये गये अण्डे लाया था।" जमुनादास ने कहा।

"मेरे दोस्तों ने पूछा था, इसलिए मैं भी थोड़े से अण्डे पकवाकर लाया हूँ, जी!" गंगादास ने कहा।

"हुज़ूर! आप गंगादास की टोकरी में रहनेवाले अण्डों के छिलके निकलवाकर देख लीजिये, उन पर मेरा नाम होगा। आप कृपया इस की जाँच करवा लीजिये।" जमुनादास ने कहा।

"अच्छी बात है!" यों कहते न्यायाधिकारी ने गंगादास की टोकरी के अण्डों पर का छिलका निकलवा दिया। छिलके के नीचे हर अण्डे पर जमुनादास का नाम साफ़ लिखा गया था।

जमुनादास ने हँसते हुए पूछा–"साहब, आप गंगादास से पूछिये कि उसने अपने अण्डों पर यह नाम किस जादू का प्रयोग करके लिखवा दिया है।"

गंगादास कोई जवाब नहीं दे सका। न्यायाधिकारी को यक़ीन हो गया कि गंगादास ने अण्डों की चोरी की है और उसे जेल की सज़ा दी।

जमुनादास ख़ुशी से घर लौटा और अपनी पत्नी से बोला–"मैं ने गंगादास को उसकी करनी की अच्छी सज़ा दिलायी है।"

"कैसे तुम उसे चोर साबित कर सके?" जमुनादास की पत्नी ने पूछा। जमुनादास ने उसे बताया कि गंगादास ने जो अण्डे चुराये थे, उन अण्डों के छिलके के नीचे मेरा नाम लिखवाया था, इसलिए उसकी चोरी साबित हो गयी।

"असल में अण्डों के नीचे तुम्हारा नाम कैसे लिखा गया है?" पत्नी ने पूछा।

"ओह, यह बात है! यह तो गणपति मामा की बतायी गयी युक्ति है। मामा के यहाँ से लौटते वक़्त मैं अम्लसुरा और फिटकिरि ख़रीद लाया था। जानती हो, कमरे में अकेले बैठ कर मैं ने क्या किया? अम्लसिरा में फिटकिरि मिला कर उस द्रवपदार्थ से अण्डों पर मैंने अपना नाम लिखा। उसके सूख जाने पर तुम ने अण्डों को उबाल लिया। बस, यही तो मैंने किया है?" जमुनादास ने समझाया।

उड़न खटोला

सैकड़ों साल पहले की बात है। फारस पर सबूर नामक एक मशहूर सुलतान शासन करता था। वह उस जमाने के सभी सुलतानों में ज्यादा अमीर और अक़्लमंद भी था। अलावा इसके वह बड़ा दानी भी था। जो कोई जाकर उससे याचना करता, तो वह खाली हाथ नहीं लौटता था। गरीबों और विदेशियों के प्रति वह अच्छा आदर दिखाता था। मगर इंसाफ़ के फ़ैसले सुनाने में वह बड़ा कठोर था और अपराधियों को कड़ी सज़ा सुनाया करता था। उसकी न्याय प्रियता सारे देश में प्रसिद्ध थी।

सुलतान साबूर के तीन खूबसूरत बेटियाँ और एक बेटा था। बेटे का नाम कमरल आक्मार था।

हर साल सुलतान अपनी रिआया के वास्ते दो बड़े जलसे मनाते थे। वसंत ऋतु में नौरोज उत्सव और हेमंत ऋतु में मिहिर्गान उत्सव मनाये जाते थे। इन दो उत्सवों के समय हमेशा सुलतान के दर्वाज़े खुले रहते थे। दान-धर्म दिये जाते थे। नये लोगों को सुलतान के दरबार में नौकरी लग जाती थी। पुराने कर्मचारियों को तरक़्की मिलती थी। उत्सव के दिनों में फारस के कोने-कोने में से लोग आते। पंडित, कलाकार, नट आदि आकर अपनी कला का परिचय देते, इनाम पाकर खुशी से अपने शहर को लौट जाते थे। मनोरंजन के कार्यक्रमों में भाग लेते। सुलतान को भेंटें समर्पित करते और उनके द्वारा तरह-तरह के इनाम पाकर लौट जाते थे।

एक साल नौरोज उत्सव मनाया जा रहा था। सुलतान दरबार में बैठा था, तब तीन पंडित आ पहुँचे। वे तीनों तीन

अरबी कहानी

शास्त्रों में पारंगत थे। वे अपने गुप्त ज्ञान के द्वारा लोगों को अश्चर्य चकित कर देनेवाले थे। वे तीनों तीन देशों से आये हुए थे। एक हिन्दुस्तान से आया था, दूसरा रोम से और तीसरा फारस का निवासी था और फारसी भाषा बोल सकता था। तीनों पंडित अपनी अपनी कला में एक दूसरे से माहिर थे।

हिन्दुस्तान से जो पंडित आया था, उसने सुलतान को प्रणाम किया। उसे आशीर्वाद देकर सुलतान के सामने एक अनोखी भेंट रख दी। वह भेंट एक मनुष्य की मूर्ति थी। वह सोने से बनायी गयी थी और उस में रत्न जड़े थे। उस मूर्ति के हाथ में एक तुरही थी।

"इसकी उपयोगिता क्या है?" सुलतान ने पंडित से पूछा।

"जहाँपनाह! इस मुर्ति की शक्ति ही इसकी उपयोगिता को स्पष्ट कर देती है। यदि आप अपने नगर द्वार के पास इसे बिठा दे तो यह दिन-रात पहरा देगी। दुश्मन अगर हमला करने आयेगा, तो उसके दूर रहते ही यह तुरही बजा देगी। तुरही की आवाज़ सुनकर दुश्मन थर थर कांप उठेगा और बिना लडाई-झगड़े के डर के मारे मर जायेगा।" हिन्दुस्तान के पंडित ने समझाया।

"आप ने जो कुछ बताया, अगर वह सच निकले तो आप जो मुझसे मांगे, मैं आपको दे दूंगा, नहीं तो आपको कड़ी

सज़ा दी जायगी।" सुलतान ने खुशी में आकर कहा।

इसके बाद रोम का पंडित आगे बढ़ा। सुलतान को नमस्कार करके उसके सामने चांदी की एक थाली रख दी।

उस थाली के बीच सोने का एक मोर था और उसके चारों तरफ़ चौबीस मोरनियाँ थीं।

"पंडितजी! इन मोर और मोरनियों का क्या उपयोग है? सविस्तार हमको समझा दीजिये।" सुलतान ने रोम के पंडित से पूछा।

"हुज़ूर! हर घंटे में एक बार मोर एक एक मोरनी को अपनी चोंच मार कर पंख खोले नृत्य करेगा। इस तरह दिन के चौबीस घंटों का वक़्त बतानेवाली घड़ी है यह थाली। एक एक मोरनी एक एक घंटे का वक़्त बताती है। इतना ही नहीं एक महीने का समय पूरा होते ही यह मोर अपना कंठ खोलकर दूज के चांद को दिखा देता है।" रोम के पंडित ने उत्तर दिया।

"वाह, यह कैसा अद्‌भुत है! मगर आप का कहना सच निकला, तो हम आपको वचन देते हैं कि आप जो भी पूछेंगे, सो दे दूंगा।" सुलतान ने कहा।

तब फारस का पंडित आगे बढ़ा। सुलतान को सलाम करके उसके सामने एक घोड़े को रख दिया। वह एक क़ीमती काली लकड़ी से तैयार किया गया था। उस पर सोने और जवाहिरात जड़े थे।

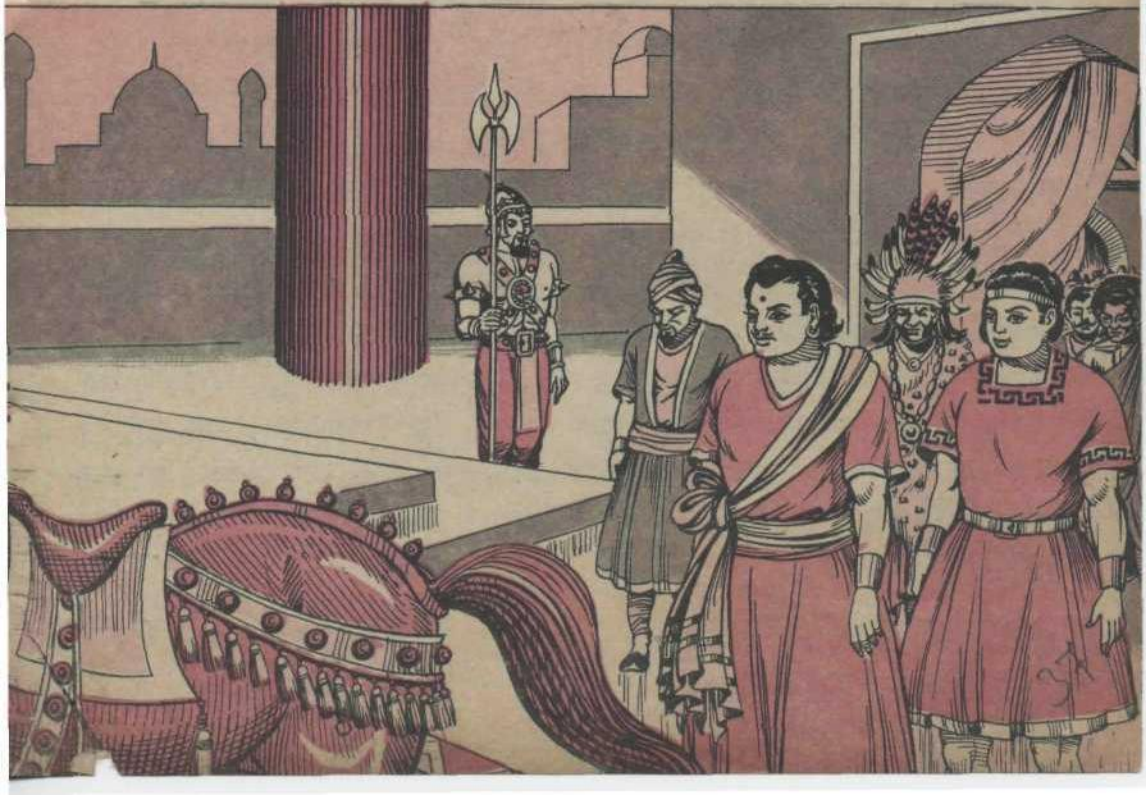

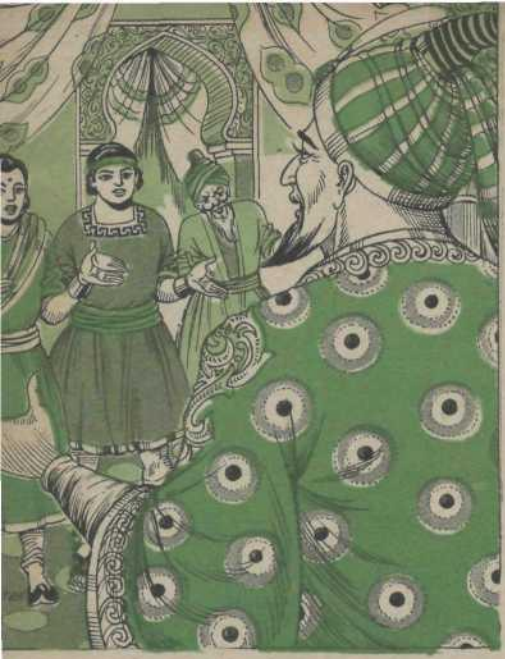

उस पर जीन, रिकाब और लगाम कसे थे। देखने में वह बहुत खूबसूरत लगता था।

"इसकी क्या उपयोगिता है?" सुलतान ने फारस के पंडित से पूछा।

"जहाँपनाह, इस पर जो सवार होगा, वह मनोवेग के साथ आसमान में जहाँ चाहे वहाँ उड़ सकता है। मामूली घोड़ा एक साल में जितनी दूर दौड़ सकता है,. उतनी दूर यह लकड़ी का घोड़ा एक दिन में जा सकता है।" फिर भी यह थकावट का अनुभव नहीं करेगा। फारस के पंडित ने अपना कमाल सुनाया।

"यह बात सच निकली तो आप को मुंह मांगी मुराद मिल जायगी।" सुलतान ने कहा।

तीनों पंडितों ने सुलतान को जो भेंटें दी थीं, उनकी तीन दिनों में जांच की। यह साबित हुआ कि हिन्दुस्तान के पंडित का दिया हुआ सोने का आदमी तुरही बजा सकता है। रोम के पंडित के मोर ने सही ढंग से घंटे बताये। फारस के पंडित के घोड़े पर सवार हो सुलतान आसमान में उड़ा, और आराम से समय पर ज़मीन पर उतर आया।

अबू सुलतान साबूर की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने पंडितों से कहा– "महानुभावो, आप लोगों की प्रतिभा अद्‌भुत है! आप अपनी अपनी इच्छा बतला दीजिये। उनकी पूर्ति करना मेरा कर्तव्य है।"

इस पर तीनों पंडितों ने कहा– "जहाँपनाह, आप हमारी भेंटों से खुश हुये हैं, और हमारी इच्छाओं की पूर्ति करना चाहते हैं। इसलिए आप अपनी तीनों बेटियों की शादी हमारे साथ कर दीजिये। हमारी इच्छा आप के दामाद बनने की ही है।"

सुलतान ने झट कह दिया–"अच्छी बात है, ऐसा ही करूँगा।" यों कह कर उसी वक़्त काजी और गवाहियों को बुला भेजा। वे शाहजादियों की शादी के पत्र लिखने लगे।

परदे के पीछे से तीनों शहजादियाँ ये करिश्मे देख रही थीं। सुलतान की तीसरी बेटी अपने होनेवाले शौहर को देख अंदाज लगाने लगी कि फारस के पंडित की उम्र तो सौ साल से कम न होगी। उसे देखते ही शहजादी का बदन कांप उठा। अलावा इसके उन तीनों शहजादियों में वही ज्यादा खूबसूरत थी। ऐसी खूबसूरत जवान लड़की को उस बूढ़े के गले बांध देने की बात सुनते ही वह अपने कमरे में दौड़ गयी। जमीन पर लोटते हुए फूट-फूट कर रोने लगी। उसने अपने सारे कपड़े फाड़ लिये और पागल की तरह अपने मुंह खरोंचने लगी।

उस हालत में उसका भाई कमरल आकमार शिकार से घर लौटा। अपनी बहन को रोते सुनकर उसके कमरे में आया और पूछा–"बहन, रोती क्यों हो? बताओ, क्या हुआ?"

"भाई साहब, हमारे बाप ने मेरी शादी एक बूढ़े जादूगर के साथ करने का वादा किया है, वह एक लकड़ी का घोड़ा लाया है। बाप को उसने अपने जादू के घोड़े के करिश्मे दिखा कर पागल-सा बना दिया है। मैं मरने के लिए तैयार हो जाऊँगी, लेकिन उस बूढ़े के साथ शादी नहीं करूँगी।" शहजादी ने कहा।

कमरल ने अपनी बहन को तसल्ली दी, तब अपने बाप के पास जाकर बोला–"आप ने क्या मेरी बहन की शादी एक बूढ़े जादूगर के साथ करने का वादा किया है? वह कैसी भेंट लाया है? उसे देख आप मेरी प्यारी बहन की जिंदगी बरबाद करने के लिए तैयार हो गये? यह शादी कभी नहीं हो सकती? अगर हुई तो बहन खुदखुशी कर लेगी।"

कमर जब ये शब्द कह रहा था, तब लकड़ी का घोड़ा लानेवाला बूढ़ा फारसी पंडित वहीं पर था, उसे क्रोध आया, मगर चिंता में उसका दिल बैठ गया। लेकिन सुलतान अपने बेटे से बोला–"बेटा, यह

पंडित जो लकड़ी का घोड़ा लाया है, उसे तुम देखोगे तो ऐसी बातें नहीं कहोगे।"

इसके बाद वह अपने बेटे के साथ बाहर आया, लकड़ी का घोड़ा लाने के लिए अपने नौकरों को आदेश दिया।

उस घोड़े को देख कमर मुग्ध हुआ। घोड़े की सवारी उसे बहुत ही पसंद थी। इसलिए वह झट उछलकर घोड़े पर बैठ गया। रिकाब में पैर डालकर घोड़े को ललकारा, मगर घोड़ा हिला नहीं, ज्यों का त्यों खड़ा था।

तब सुलतान ने पंडित से कहा–"साहब, देख लो, घोड़ा क्यों हिलता नहीं? मेरे बेटे को इसका राज़ बता दीजिये, तब आपकी इच्छा की पूरी हो जायगी।"

सुलतान के बेटे से बूढ़ा बहुत ही नाराज़ था। वह कमर के नज़दीक जाकर बोला–"जीन के दायीं ओर जो सोने की घुंड़ी है, उसे घुमा दो तो घोड़ा ऊपर उठेगा।"

इसके तुरंत बाद सुलतान के बेटे ने घुण्डी घुमा दी, झट घोड़ा आसमान में उड़ा। कुछ ही क्षणों में कमर जमीन पर देखनेवालों की नज़र से ओझल हो गया। कई घंटे बीत गये, मगर उसका पता नहीं चला।

सुलतान ने बूढ़े से पूछा–"अजी, बता दीजिये, मेरे बेटे को ज़मीन पर कैसे लावे?"

इस पर बूढ़े ने कहा–"हुज़ूर, अब आपके बेटे का लौट आना नामुमक़िन है। मेरे यह बताने के पहले वह उड़कर चला गया कि नीचे उतर आने के लिए बायीं ओर की घुण्डी दबानी है। आप जानते ही होंगे कि आधा ज्ञान अनर्थदायक होता है।"

यह बात सुनकर सुलतान को बड़ा गुस्सा आया। उसने कहा–"इस बूढ़े को मार-पीट कर अंधेरी कोठरी में डाल दो।" इसके बाद वह दुख में आकर अपने बाल नोचते कमरे के द्वार बंद कराकर घर के लोगों के बीच शोक के समुद्र में डूब गया। (और है)

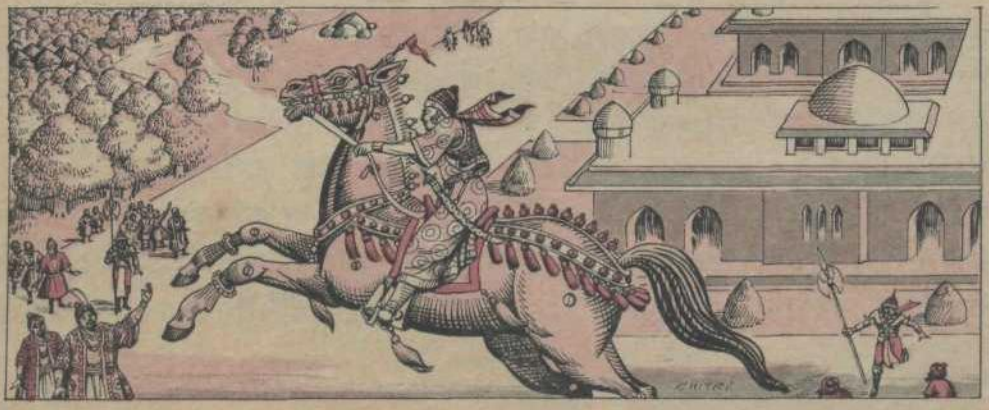

लोभ

प्राचीनकाल में रामशर्मा नामक एक ब्राह्मण ने अपनी दरिद्रता से तंग आकर ब्रह्मा के प्रति घोर तपस्या की।

बहुत समय बाद ब्रह्मा प्रत्यक्ष हुए। "भगवन, लोग कहते हैं कि आप भक्तवत्सल हैं। मगर आपके दर्शन देने में इतना समय क्यों लगा?" रामशर्मा ने ब्रह्मा से पूछा।

"वत्स! मेरा समय अलग है। तुम लोगों का एक युग मेरा एक दिन होता है। मैं एक ही क्षण में चला आया।" ब्रह्मा ने उत्तर दिया।

रामशर्मा ने पल भर सोचकर पूछा–"भगवान! हमारे एक करोड़ रुपये आपके हिसाब से कितने होते हैं?"

"एक पैसे के बराबर!" ब्रह्मा ने कहा।

"तो भगवन, मुझे आपका एक पैसा दिलवा दीजिये।" रामशर्मा ने विनती की।

"एक मिनट में आया।" यह कहकर ब्रह्मा अदृश्य हुए।

जायदाद के वास्ते!

एक गाँव में शिवराम नामक एक किसान था। उसके यहाँ थोड़ी-सी ज़मीन जायदाद थी। उसके तीन बेटे थे, तीनों खेती करने में अपने बाप का हाथ बंटाया करते थे।

बेटे जब जवान हो गये, तब शिवराम ने उनकी शादियाँ करके खेतीबारी की जिम्मेदारी उन्हें सौंप दी।

बहुओं के घर आने पर शिवराम की ज़िंदगी में भारी तब्दीली हो गयी। शिवराम के जागते ही हाथ-मुँह धोने के लिए एक बहू पानी ला देती, उसके दंत-मंजन करना खतम होते ही दूसरी बहू नाश्ता लाती, नाश्ता के खतम होते ही तीसरी बहू पुराण तथा व्यास पीठ लाकर चबूतरे पर रख देती।

इस तरह शिवराम की बहुएँ उसे कोई तक़्लीफ़ न होने देती थीं। बेटे खेतीबारी करके सारी आमदनी लाकर अपने बाप के हाथ में रख देते।

शिवराम सोचा करता कि उसके जैसा सुखी आदमी दुनिया में दूसरा न होगा। जब वह घर के बाहर चबूतरे पर बैठ कर पुराण पढ़ता, तब कोई जान-पहचान का आदमी उस रास्ते से गुजरता तो उन्हें बुलाकर बगल में बैठा देता और उन्हें बताता कि उसका समय कैसे आराम से कटता है।

इसी तरह शिवराम ने एक दिन अपने मित्र रंगनाथ से बताया कि उस के बेटे और बहू उसे कैसे आराम से रख रहे हैं।

सारी बातें सुनकर रंगनाथ ने कहा– "शिवराम, तुम एक और काम करोगे तो तुम्हारा सारा बोझ हल्का होगा। और तुम इस से भी ज़्यादा सुखी रहोगे। वह यह कि तुम अपनी जायदाद अपने बेटों के

विष्णुकांत वर्मा

बीच बराबर बांट दो, नहीं तो तुम्हारे मरने के बाद वे जायदाद के वास्ते आपस में झगड़ा कर सकते हैं।" यों कहकर रंगनाथ चला गया।

शिवराम ने अपने मित्र की सलाह के बारे में रात भर खूब सोचा, विचार किया। उसे वह सलाह अच्छी लगी। उसने अपनी सारी ज़मीन-जायदाद अपने तीनों बेटों के बीच बराबर बांट कर दे दिया।

इस घटना के दूसरे दिन से ही शिवराम की ज़िंदगी में एक और बड़ा परिवर्तन आया। शिवराम की बहुएँ उसकी सुध न लेती थीं। उसकी ज़रूरतों की वे चिंता नहीं करतीं, खेती में जो आमदानी होती थी, उसे बेटे उसके हाथ नहीं सौंपते थे।

शिवराम अपनी इस ज़िंदगी से ऊब गया। वह सदा चबूतरे पर उदास मुँह लिए बैठा रहता, जो कोई जान-पहचान का आदमी उस रास्ते से गुजरता, उनसे अपनी तक़लीफ़ों के बारे में बता देता। अब वह बहुत व्यथित मालूम होता था।

शिवराम के मित्र रामशास्त्री ने एक दिन उसकी सारी कहानी सुनकर बताया– "तुम्हारी जायदाद के वास्ते तुम्हारे बेटे और बहुओं ने तुम्हारी ऐसी सेवा की, जब तुम ने अपनी सारी जायदाद बांट कर उन्हें दे दी, तब तुम से उन की ज़रूरत नहीं रह गयी। मगर तुम फिर से सुख पाना चाहते हो, तो एक ही रास्ता है। मैं तुम्हें एक टीन की पेटी में सौ रुपये के छुट्टे

पैसे दे देता हूँ। रात के वक़्त तुम अपने कमरे के किवाड़ बंद कर लो। सारे छुट्टे पैसे नीचे डाल दो, एक एक सिक्का हाथ में लेकर टीन की पेटी में इस तरह से डाल दो, जिस से ज़ोर की आवाज़ हो सके। एक हाथ से सिक्का डाल दो, दूसरे हाथ से उसे बाहर निकाल दो, इस तरह रोज़ घंटा भर करते जाओ। तब देखो, क्या होनेवाला है?"

उस दिन से रोज़ शिवराम के कमरे से उसकी बहुओं को सिक्कों की झनझनाहट सुनायी देती। पहले वे आश्चर्य में आ गयीं। इसके बाद उन में अपने ससुर के प्रति श्रद्धा और भक्ति पैदा हो गयी।

शिवराम की ज़िंदगी अब पहले की तरह आराम से कटने लगी। बेटे भी खेती के संबन्ध में सारी जानकारी उसे देने लगे। शिवराम के दिन मजे से कटते देख उसका मित्र रामशास्त्री बड़ा प्रसन्न हुआ, क्यो कि उसकी चाल चल निकली थी।

कुछ साल बीत गये। शिवराम का देहांत हो गया। अंतिम घड़ियाँ निकट आया देख रामशास्त्री शिवराम को देखने आया। शिवराम के प्राणों के निकलने की देरी थी कि उस टीन की पेटी के वास्ते उसके बेटे ओर बहू उतावले होने लगे। तब रामशास्त्री ने उन्हें समझाया–"अरे भाई, रुपये जायेंगे कहाँ? पहले अपने पिता के अंतिम संस्कार कर दो तब दस लोगों के सामने पेटी खोलकर उस में जो कुछ हो, उसे तुम तीनों भाई बराबर बांट लो।"

रामशास्त्री की सलाह के अनुसार शिवराम के बेटों ने अपने पिता की अंतिम क्रियाएँ कीं, तब बुजुर्गों के समक्ष पेटी खोलकर देखा। उस में बहुत सारे छुट्टे पैसे मात्र थे। उसके साथ एक चिट भी था जिस में यों लिखा हुआ था : "इस पेटी में जो सौ रुपये के छुट्टे पैसे हैं, वे मेरे मित्र रामशास्त्री को प्राप्त हों!"

यह चिट देख शिवराम के बेटे और बहू आश्चर्य में आ गये। रामशास्त्री अपने पैसे लेकर चला गया।

दो मूर्ख

एक गाँव में दो मूर्ख थे। वे बचपन से ही दोस्त थे। वे दोनों एक दिन एक गली में मिले। उन में एक के हाथ में थैली थी जिस में कोई चीजें थीं।

"अरे उस थैली में क्या है?" दूसरे मूर्ख ने पूछा। पहले मूर्ख ने अपनी अक़्लमंदी का परिचय देते हुए कहा–"इस थैली में जो चीजें हैं, उन्हें बता दोगे तो, इस थैली के सभी अण्डे तुम्हें दे देता हूँ।"

दूसरा मूर्ख बड़ी देर तक सोचता रहा। पर जवाब नहीं दे पाया।

इस पर पहले मूर्ख ने कहा–"अरे तुम बता नहीं पाये? इस में अण्डे हैं, कितने अण्डे हैं, यह बता दोगे तो थैली में रहनेवाले ये दस अण्डे तुम्हें दे दूंगा।"

दूसरा मूर्ख सोचता रहा, पर जवाब नहीं दे पाया।

घमण्ड का फल

राजा पांड्य के दरबार में विष्णुशर्मा नामक एक पंडित था। राजा उस पंडित का बड़ा आदर करता था। इसका फ़ायदा उठाकर विष्णुशर्मा राज्य के अन्य सभी पंडितों से शुल्क वसूल करता था, यदि कोई शुल्क देने से इनकार करता तो उसे विष्णुशर्मा के साथ शास्त्र-चर्चा करके उसे हराना था। इस कारण विष्णुशर्मा का नाम 'पंडित कोलाहल' पड़ गया था। कोलाहल से तंग आकर कई पंडित उस राज्य को छोड़ पड़ोसी राज्यों में चले गये थे।

उसी राज्य में महा भाष्यभट्ट नामक एक और पंडित था। वह महा पंडित तो था, पर परम साधु प्रकृति का था। वह कोलाहल के साथ झगड़ा मोल लेना नहीं चाहता था, इसलिए वह और पंडितों की भांति कोलाहल को नियमित रूप से शुल्क चुकाया करता था पर उसे शुल्क चुकाने में काफ़ी कष्ट झेलने पड़ते थे।

महा भाष्यभट्ट के पास यामुनु नामक एक शिष्य था। वह बड़ा ही चरित्रवान और आज्ञाकारी था। अपने गुरु को वह देवता के समान मानता था। उसने अपने गुरु के यहाँ समस्त शास्त्रों का अध्ययन कर लिया था। वह प्रखर बुद्धिवाला भी था।

महा भाष्यभट्ट कोलाहल को दो साल का शुल्क चुका नहीं पाया था। वह शुल्क वसूल कर लाने के लिए कोलाहल ने वंजी नामक अपने शिष्य को भेजा। वंजी वास्तव में नक्षत्रक स्वभाव का था। वह पंडितों को डरा-धमका कर कर वसूल करता था।

वंजी जब महा भाष्यभट्ट के घर पहुँचा, तब वह पंडित किसी काम से दूसरे गाँव में गया था। वंजी ने महा भाष्यभट्ट का

गंगाप्रसाद

परिहास करते हुए यामुनु से शुल्क की चर्चा कर दी।

अपने गुरु का परिहास करते देख यामुनु सहन नहीं कर पाया और बोला–"मेरे गुरुजी को तुम्हारे गुरु को असल में शुल्क अदा क्यों करना चाहिए? क्या पांडित्य में मेरे गुरुजी तुम्हारे गुरु से कम हैं? यह प्रमाणित हो जाय, तभी तो हम मान सकते हैं।"

"तब तो तुम अपने गुरु से कह दो कि वे मेरे गुरु के साथ तर्क करके हरा दे।" वंजी ने कहा।

"तुम्हारे गुरु को हराने के लिए मेरे गुरु को घर छोड़ उतनी दूर आने की क्या जरूरत है? चलो, मैं ही आकर उन्हें हरा देता हूँ।" यों कहते यामुनु वंजी के साथ राजसभा के लिए चल पड़ा।

दरबारियों ने जब जान लिया कि यामुनु राजसभा में क्यों आया है, तब उन लोगों ने मन में सोचा–"राई और पर्वत के बीच सामना कैसा? बेचारा यह युवक हार जायगा"

रानी का कोलाहल के प्रति अच्छा विचार न था। उसने यामुनु को देख सोचा–"यह तो चिनगारी जैसा है। पुआल का ढ़ेर चाहे जितना भी बड़ा क्यों न हो, उसे भस्म करने के लिए एक अग्निकण पर्याप्त है।"

इसके बाद कोलाहल तथा यामुनु के बीच शास्त्र-वाद शुरू हो गया। कोलाहल ने यामुनु से तर्क तथा व्याकरण शास्त्र संबंधी कुछ प्रश्न किये। यामुनु ने बड़ी सुगमता से उनके उत्तर दिये।

तब कोलाहल ने यामुनु से कहा–"तुम अपनी इच्छा से कोई प्रतिपादन करो, मैं उसका खण्डन करूंगा। यदि मैं खण्डन नहीं कर सका तो तुम्हीं खण्डन करो, तब तुम्हारी विजय मानी जायगी।"

यामुनु हँसते हुए बोला–"आपकी माँ बांझी नहीं हैं।"

"यह निर्विवाद सत्य है। इसका कोई खण्डन नहीं कर सकता।" कोलाहल ने कहा।

"पांडव राजा धर्मात्मा हैं।" यामुनु ने कहा।

"यह भी निर्विवाद सत्य है।" कोलाहल ने कहा।

"महारानी पतिव्रता है।" यामुनु ने फिर कहा।

"इसका भी कोई खण्डन नहीं कर सकता।" कोलाहल ने जवाब दिया।

"आप हार गये! मैंने जो प्रतिपादन किये, उनका मैं खण्डन कर सकता हूँ।" यामुनु ने कहा।

ये बातें सुनकर सभी दरबारी आश्चर्य चकित हो गये।

"आप अपनी माँ के एक ही पुत्र हैं। मनुसंहिता में बताया गया है–'एक पुत्रो ह्यपुत्र इति लोकवादात्।' इसलिए आप अपनी माता के एक पुत्र के होते हुए भी वे बांझ के समान हैं।"

"अब रही, राजा की बात! 'सर्व तो धर्म षड्भागो, राज्ञोभवति रक्षतः अधर्मादपि षड्भागो, भवत्यस्यह्यरक्षतः' यह भी मनुसंहिता में है। याने प्रजा के द्वारा किये जानेवाले पाप और पुण्य का छठा भाग राजा को प्राप्त होता है। इस कलियुग में चाहे राजा जितने भी बड़े धर्मात्मा हो, प्रजा असंख्य पाप किया करती है। उसका छठा अंश राजा को प्राप्त होता है, इस कारण से राजा पूर्णरूप से धर्मात्मा नहीं बन सकते।"

"अब रानी की बात। मनुसंहिता में राजा के बारे में यों है–'सोग्निर्भवति वायुश्चसोर्क, स्सोम, स्स धर्मराट, स कुबेर, स्स वरुणः, स महेन्द्रः प्रभावतः' राजा में इस प्रकार अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र, कुबेर, वरुण, इन्द्र नाम से आठ व्यक्तियों के होते, उन आठों की पत्नी रानी पतिव्रता कैसे हो सकती हैं?" यामुनु ने समझाया।

राजा तथा सभासद यामुनु के चमत्कार पर बहुत प्रसन्न हुए। कोलाहल पराजित हो अपने सर झुकाये सभाभवन से चला गया।

कंजूस बुढ़िया

एक गाँव में एक कंजूस बुढ़िया थी। उसकी कंजूसी के बारे में लोग तरह-तरह की कहानियाँ सुनाया करते थे। उसके पास एक पुरानी झोंपड़ी, एक बादाम का पेड़ तथा एक नीम करीम का पौधा संपत्ति के नाम से था। वह किसी को अपने पास ही न आने देती थी।

कोई काला नीम मांगने हुए आते तो मुट्ठी भर चावल लेकर दो टहनियाँ दे देती। गाँव के लड़के बादाम के लिए आते उन से एक पैसा लेकर एक बादाम दे लेती। उस बुढ़िया की झोंपड़ी में रसोई बनानेवाले मिट्टी के बर्तन, एक तकिया जिस से बदबू निकल रही थी और एक फटा-पुराना कंबल मात्र थे।

उसी गाँव में कृष्णदास नामक एक आवारा लड़का था। उसने सोचा कि बूढ़ी के आश्रय में जाने से बड़ा लाभ होगा। वह ज्यादा दिन जियेगी नहीं, वह मर जायगी तो सारी संपत्ति उसकी होगी।

एक दिन कृष्णदास बुढ़िया की झोंपड़ी के पास आया। उस वक़्त बूढ़ी बादाम के नीचे कंबल बिछा कर सरहाने तकिया रख कर लेटी थी और पेड़ पर गिलहारी भगाने के लिए पहरा दे रही थी।

"नानीजी! तुम्हारे बादाम कैसे होते हैं?" कृष्णदास ने पूछा।

बूढ़ी ने कृष्णदास की ओर एड़ी से चोटी तक देख कर कहा—"बेटा! किसने चखकर देखा है? चाहो तो एक पैसा देकर ख़रीद लो और खा कर देख लो।"

यह बात सुनकर कृष्णदास हंस पड़ा ओर बोला—"नानीजी! मैं तुम्हारी मदद करूँगा। तुम मुझे अपने घर क्यों नहीं रख लेती?" कृष्णदास ने पूछा।

बालकृष्ण शर्मा

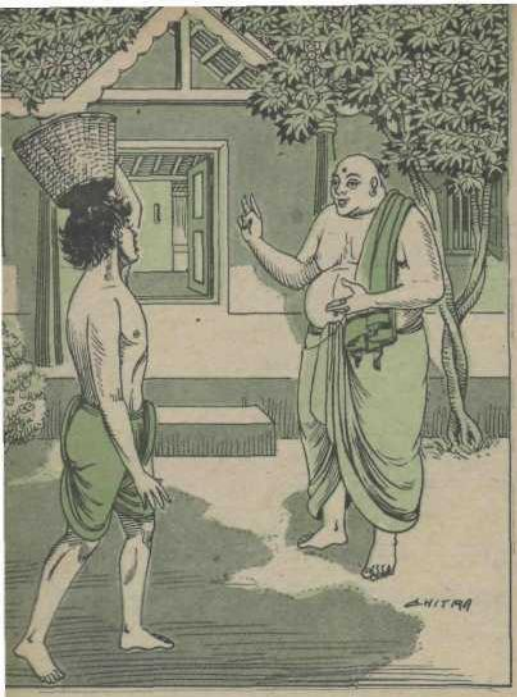

"अरे, तुम करोगे ही क्या? तुम्हारे लिए खाना देना भी बेकार है?" बूढ़ी ने उत्तर दिया।

"बेकार नहीं होगा, नानीजी! दो दिन तो अपने यहाँ रख कर देख तो लो! मगर तुमको बेकार लगा तो मुझे निकाल दो। तुम्हारे बादाम और काला नीम बाजार में बेच आऊँगा। चार पैसे तुम्हें ज़्यादा मिल जायेंगे।" कृष्णदास ने कदा।

बूढी ने जरा सोचकर कहा–"अच्छी बात है! तुम गिलहरियों पर पहरा देते रहो। मैं तुम्हारे काम से खुश हो जाऊँगी तो रख लूंगी।" ये शब्द कहते बूढ़ी कंबल और ताकिया लेकर झोंपड़ी के भीतर चली गयी।

बूढ़ी कृष्णदास को खाना तो देती थी। मगर बदले में उस से कसकर काम लेने लगी। बेचने के लिए बादाम और काला नीम की टहनिया गिन कर देती। एक पैसा भी कम हो जाता तो डांट देती। इतना होते हुए मी कृष्णदास सहते हुए बूढ़ी की मौत का इंतज़ार करने लगा।

कुछ समय बाद बूढ़ी बिलकुल कमज़ोर हो गयी। उसने जान लिया कि अब उसकी मौत के दिन निकट आ गये हैं। उसकी झोंपड़ी बेकार किसी के हाथ क्यों लगे, इस ख्याल से उसने अपनी झोंपड़ी एक सेठ के यहाँ गिरवी रख दी और रुपये ले लिये। बूढ़ी के जाने के बाद कृष्णदास काला नीम बेचते सेठ के घर से होकर निकल पड़ा। सेठ ने उसे बुलाकर कहा–"अरे कृष्णदास, बूढ़ी ने अपनी झोंपड़ी गिरवी रख कर मुझ से दो सौ रुपये ले लिये हैं। इस में तुम्हारा कितना हिस्सा है?"

कृष्णदास यह सोचते आगे बढ़ा कि बूढ़ी ने अपनी झोंपड़ी के भी दाम बना लिये हैं। लेकिन वे रुपये जायेंगे ही कहाँ?

रोज़ रात के वक्त बूढ़ी झोंपड़ी में सोती है, और कृष्णदास बादाम के पेड़ के नीचे सोता। एक दिन रात के वक़्त झोंपड़ी में आहट होते देख उसके छेदों में से

भीतर झांक कर देखा। भीतर एक दिये की रीशनी में बूढ़ी रुपये गिन रही थी।

"बूढ़ी, तुम्हारे मरने पर ये सारे रुपये मेरे हाथ लाग जायेंगे।" यह सोचते कृष्णदास बादाम के नीचे लौट गया।

दिन गुजरते जा रहे थे। एक दिन बूढ़ी उठी नहीं। उसे कोई बीमारी हो गयी थी। कंबल बिछाकर लेटी थी। उसे सांस लेने में भी बड़ी मुशकिल हो रही थी। बूढ़ी ने सोचा कि अब उसकी मौत निकट आ गयी है। उसने कृष्णदास को बुलाकर कहा–"बेटा, मेरी मौत निकट आ गयी है। चलो, हम जाकर श्मशान में बैठ जायेंगे। यहीं पर मर जाऊँगी तो जनाजा उठानेवाले ज्यादा रुपये मांग बैठेंगे।"

कृष्णदास खीझ कर बोला–"श्मशान में जाने से क्या खर्च कम हो जायगा? लकड़ी और आदमी तो चाहिये ही।"

"अरे, मेरी लाश क्यों जलाना चाहते हो? रुपये बेकार क्यों खर्च करने हैं? गड्ढा खोदने के लिए काफी रुपये मांग बैठेंगे। तुम्हीं वह गड्ढा खोद लो। मेरी जान के निकलते ही मुझे उस गड्ढे में दफना दो।" बुढ़िया ने उपाय बताया।

कृष्णदास ने सोचा कि बूढ़ी जो कुछ बचायगी, वह सब उसी के लिए फ़ायदा होगा। इसके बाद बूढ़ी कंबल और तकिया लेकर चल पड़ी। कृष्णदास ने कुदाल ले लिया। दोनों श्मशान में जा पहुँचे। श्मशान में उस वक़्त कोई न था। एक

इमली के पेड़ के नीचे सिरहाने तकिया रख कर बुढ़ी लेट गयी।

कृष्णदास गड्ढा खोदने लगा। बूढ़ी ने पूछा–"बेटा, क्या गड्ढा खोद चुके हो?"

"नानीजी, गड्ढा खोदना पूरा होते ही मैं तुमको बुलाऊँगा।" कृष्णदास ने जवाब दिया।

कृष्णदास ने जब गड्ढा खोदने का काम पूरा किया, तब तक सबेरा होने को था।

"बूढी नानी, गड्ढा खोद चुका हूँ।" कृष्णदास ने कहा। बूढ़ी के मुँह से बात न निकलते देख कृष्णदास ने सोचा कि वह मर गयी है।

"पिंड छूट गया है! झोंपड़ी में छिपाया गया सारा धन मेरा ही है!" यह सोच कर कृष्णदास बड़ा खुश हुआ। बूढ़ी के बदबूदार तकिया और कंबल को छूने में उसे घृणा हुई। उसने एक लाठी से उन दोनों चीज़ों को गड्ढे में गिरा दिये। उस पर मिट्टी डाल कर जल्दी-जल्दी झोंपड़ी की ओर भागा।

उसने लालटेन जला कर सारी झोंपड़ी छान डाली। मगर कहीं भी उसे एक कौड़ी हाथ न लगी। झोंपड़ी के छप्पर को उखाड़ कर देखा। कोई फ़ायदा न रहा। उसने सोचा कि जिस दिन बूढ़ी ने झोंपड़ी गिरवी रख दी, उसी दिन उन रुपयों को उड़ा देता तो अच्छा होता। वे रुपये भी अब गायब हो गये हैं। यह सोचने लगा कि वह पूर्व जन्म में बूढ़ी का ऋणी था। इसलिए इस जन्म में उसकी सेवा की है। उसे तो कुछ भी हाथ न लगा। लेकिन कृष्णदास के दिमाग में यह बात नहीं आयी कि बूढ़ी ने अपने सारे रुपये उस बदबूदार तकिये में छिपा रखे थे और सारे रुपये अपने साथ ले गयी है।

सवेरा होने को था। उसने झोंपड़ी का छप्पर उखाड़ फेंका था। इस अपराध में उसे सज़ा मिलेगी। यह सोच कर उसी अंधेरे में कृष्णदास उस गाँव को छोड़कर कहीं भाग गया।

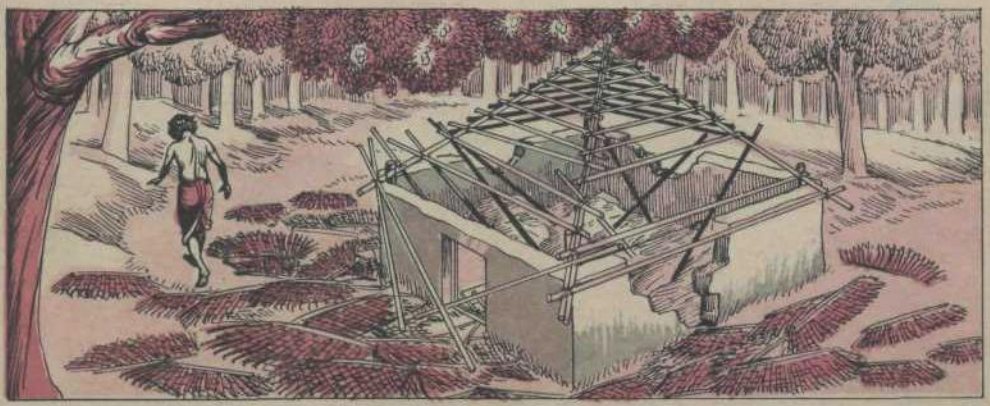

संजय पांडवों के यहाँ अपना दूत कार्य समाप्त कर हस्तिनापुर को लौट आया। धृतराष्ट्र के दर्शन करके बोला– "राजन, युधिष्ठिर ने सारा दोष आप पर ही आरोपित किया है। आप समाज की निंदा के पात्र बन गये हैं। युधिष्ठिर ने मेरे द्वारा जो संदेशा भेजा है, उसे मैं कल भरी सभा में सब के समक्ष सुनाऊँगा।" इसके उपरांत धृतराष्ट्र से अनुमति लेकर संजय अपने घर चला गया।

संजय के चले जाने पर धृतराष्ट्र ने विदुर को परामर्श करने के हेतु बुला भेजा, और कहा–"पांडवों के यहाँ से संजय आ गया है। मेरा मन व्याकुल है। मेरे ताप को दूर करनेवाले वचन सुनाओ।"

विदुर ने जान लिया कि धृतराष्ट्र की व्याकुलता का कारण पांडव ही है। इस पर धृतराष्ट्र को मीठे शब्दों में डांटते हुए बोला–"राजन, तुम पृथ्वी के वास्ते झूठ न बोलकर अपने वंश के क्षय के होने से बचा लो। तुम ने दुर्योधन के वास्ते पांडवों को दूर किया। तुम देखोगे कि दुर्योधन की क्या हालत होगी, इसलिए तुम पांडवों को अपने पास बुलवाकर उनके जीने के हेतु थोड़े से गाँव दे दो। अब भी सही, अपने पुत्रों पर नियंत्रण रखो। ज्ञातियों के साथ वैर भाव उचित नहीं है। विपत्ति में वे ही लोग साथ देनेवाले हैं।"

"मैं सदा पांडवों का हित ही सोचता हूँ। मगर दुर्योधन के स्मरण आते ही मेरा मन

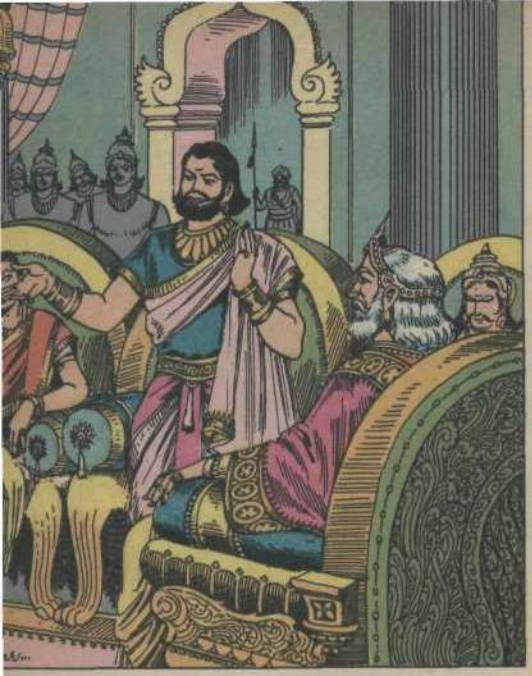

बदल जाता है। यह बात दैव योग की है। मैं क्या कर सकता हूँ?" धृतराष्ट्र ने उत्तर दिया।

दूसरे दिन धृतराष्ट्र की सभा सभासदों से खचाखच भरी हुई थी। युद्ध में दुर्योधन की सहायता करने के लिए आये हुए सभी राजा संजय का संदेशा सुनने के लिए कुतूहल के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे। उस समय संजय ने सभाभवन में प्रवेश कर सब को प्रणाम किया और कहा–"विविध देशों के राजाओ, मैं पांडवों के यहाँ हो आया हूँ। उन्होंने आप सब का परामर्श किया है। वे कुशलपूर्वक हैं। मैं ने उन्हें महाराजा धृतराष्ट्र का संदेशा सुनाया है।"

इस पर धृतराष्ट्र बीच में ही बोल उठा–"संजय, तुमने जाकर पांडवों को मेरा संदेशा सुनाया। इस बात की मुझे बड़ी प्रसन्नता है। मैं अन्य लोगों की बातें बाद को सुनना चाहूँगा, लेकिन पहले यह बताओ कि अर्जुन ने क्या कहा है?"

इस पर संजय ने यों कहा :

"सब के समक्ष सुनाने के लिए अर्जुन ने यह संदेशा दिया है–दुर्योधन इत्यादि लोगों ने अनेक पाप किये हैं, परंतु युद्ध चाहेंगे तो वे लोग पापों का फल भोगेंगे। युधिष्ठिर ने अपने क्रोध पर आज तक नियंत्रण रखा है। यदि उन का क्रोध उबल पड़ा तो उस में कौरव सब भस्मीभूत हो जायेंगे, अकेले भीम केवल एक गदा मात्र लेकर कौरव सेनाओं का निर्मूल करने लग जायेंगे। तब दुर्योधन अवश्य पश्चात्ताप करेगा। नकुल, सहदेव, विराट राजा, द्रुपद, उप पांडव, अभिमन्यु, तथा मैं जब कौरवों से जूझ पड़ेंगे तब दुर्योधन को पश्चात्ताप के सिवाय कुछ हाथ न लगेगा। मैं समस्त बुजुर्गों को प्रणाम करके हमारे राज्य के वास्ते युद्ध करूँगा। जब तक पांडव जीवित रहेंगे, तब तक धृतराष्ट्र के पुत्र हमारे राज्य का भोग सुखपूर्वक कैसे कर सकेंगे? यदि वे हमें युद्ध में पराजित कर सके तो इसका यह अर्थ होगा कि इस जगत में धर्म का विनाश

हो गया है। इसलिए कभी ऐसा नहीं होगा। कर्ण के साथ धृतराष्ट्र के सभी पुत्रों का वध मैं ही करूँगा। इसलिए आप ही लोग निर्णय कीजिये कि आप क्या ररनेवाले हैं?"

इस पर भीष्म पितामह ने दुर्योधन से कहा–"तुम कर्ण, शकुनि तथा दुश्शासन की बातें सुनकर बिगड़ते जा रहे हो, इसलिए कौरव-पांडव युद्ध के होने से रोक लो, वरना विनाश निश्चित है।"

भीष्म की बातें सुन क्रुद्ध हो कर्ण चिल्ला उठा–"भीष्म, आप ने मेरे बारे में जो बातें कहीं ये बातें अगर दूसरे किसी ने कही होती तो वह अब तक ज़िंदा नहीं रहता। मैं ने राज-धर्म का सदा पालन किया है। दुर्योधन आदि के प्रति मैं ने कभी किसी प्रकार का द्रोह नहीं किया है। युद्ध में मैं अकेले ही सारे पांडवों को जीत सकता हूँ। प्रारंभ से ही जो हमारे शत्रु रहे हैं, उनके साथ मैत्री कैसी? महाराजा धृतराष्ट्र तथा दुर्योधन के लिए जो प्रिय होगा, वह सब मैं करने के लिए तैयार हूँ।"

इस पर भीष्म ने धृतराष्ट्र से कहा–"कर्ण बार बार बकता है कि वह अकेले पांडवों का वध करेगा। पांडवों ने जो महान कार्य किये हैं, उन में से एक भी इस ने नहीं किया है। यह तो दुष्ट और

हीन स्वभाव का है, इसलिए पांडवों के प्रति अपमानजनक बातें कह रहा है। गोग्रहण के समय अर्जुन ने कर्ण के भाई को मार डाला, तब कर्ण ने उसका क्या बिगाड़ा? घोषयात्रा के समय गंधर्व दुर्योधन को पकड़ कर ले गये तो उस समय कर्ण क्या कर सका? पांडवों ने ही तो दुर्योधन को छुड़ाया? कर्ण केवल बात करना जानता है, कार्य करना नहीं, इसलिए आप उसकी बातों में न आइयेगा।"

द्रोण ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा–"भीष्म की सलाह आचरण करने योग्य है। अर्जुन ने संजय के द्वारा जो संदेशा भेजा है, उसमें रत्ती भर झूठ नहीं

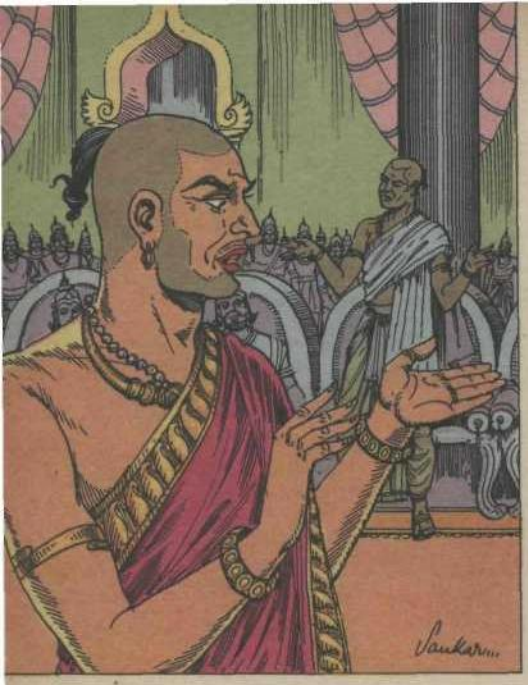

है। मैं सदा यही कहता आ रहा हूँ कि पांडवों के साथ संधि कर लो।"

भीष्म तथा द्रोण की बातों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त किये बिना धृतराष्ट्र ने संजय से पूछा–"संजय, युधिष्ठिर ने क्या कहा है?" संजय ने सविस्तार बताया कि युधिष्ठिर की सहायता कौन कौन राजा करनेवाले हैं, अंत में बताया कि युधिष्ठिर भी युद्ध के लिए तैयार हैं।

मगर धृतराष्ट्र को भीम का स्मरण करते ही डर पैदा हो गया। उसका विश्वास है कि संजय के बताये सारे योद्धा एक तरफ़ हैं तो भीम अकेले का स्थान दूसरी ओर है। भीम के बल के बारे में केवल भीष्म, द्रोण तथा कृपाचार्य ही जानते हैं। भीष्म, द्रोण तथा कृपाचार्य अनिवार्य रूप से उसके पक्ष में लड़ेंगे, मगर उन्हें पांडवों के प्रति कोई वैर भाव नहीं है। इन सब बातों का स्मरण करने पर धृतराष्ट्र को कौरवों का नाश आँखों के सामने स्पष्ट दिखाई देने लगा। अर्जुन आज तक कभी युद्ध में पराजित नहीं हुआ है। उसका सामना करनेवाले हैं ही कौन? कर्ण पर तो पूरा विश्वास नहीं किया जा सकता। द्रोण वृद्धावस्था में हैं और वे अर्जन के गुरू भी हैं।

अंत में धृतराष्ट्र ने कहा–"युद्ध के द्वारा कौरवों का नाश निश्चित है। युद्ध न करने में ही सबका हित है। यदि सब लोग सहमत हो जायेंगे तो शांति का प्रयत्न कर सकते हैं।"

इस पर संजय ने धृतराष्ट्र से कहा–"राजन, इन समस्त उलझनों का कारण आप ही हैं। कुरूजांगल भूमि को छोड़ बाक़ी सब प्रदेश पांडवों ने ही जीतकर आप को दिये थे। परंतु आपने उन राज्यों को अपने बना लिये। आप यह सोच रहे हैं कि ये सारे राज्य आप ही के हैं। आपके अधीन रहनेवाले अनेक राजा पांडवों की शक्ति से परिचित हो उन के पक्ष में गये हैं। यदि आप दुर्योधन पर

नियंत्रण न कर सके तो बड़ा ही अनर्थ हो जायगा।"

इस पर दुर्योधन ने अपने पिता से कहा– "आप यह सोच कर डरते क्यों हैं कि हम हार जायेंगे। मैं कहता हूँ कि हम अवश्य विजयी होंगे। कृष्ण का उद्देश्य है कि आप तथा विदुर को छोड़ बाक़ी सब का वध करावे। यदि पांडव युद्ध में विजयी हो सकते हैं तो पांच गाँव मांगते क्यों हैं? भीम से आप डरते ही क्यों? मैं अपने गदे के एक ही प्रहार से उसे मार सकता हूँ। भीष्म अकेले ही पांडवों की सेना का संहार कर सकते हैं। उनके साथ द्रोण तथा अश्वत्थामा मिल कर क्या अर्जुन का वध नहीं कर सकते? कर्ण के पास इंद्र की दी हुई शक्ति है। क्या अर्जुन का वध करने के लिए वह शक्ति पर्याप्त नहीं है? पांडवों की सेना में पांडव, धृतराष्ट्र तथा सात्यकी ही सच्चे योद्धा हैं। हमारे पक्ष में तो ऐसे योद्धा अनेकों हैं।"

इसके बाद उसने संजय से पूछा– "पांडवों का युद्धतंत्र कैसा है?" संजय ने समझाया कि कौरवों की सेनाओं में से किन किन सेनाओं तथा योद्धायों के साथ लड़ने के लिए पांडव पक्ष के योद्धाओं ने चुन लिया है, सविस्तार समझाया।

ये विवरण सुनकर धृतराष्ट्र घबरा उठे और दुर्योधन से बोले–"बेटा, युद्ध का विचार छोड़ दो। सब लोग तुम्हारी तारीफ़ करेंगे। तुम्हें आराम से जीने

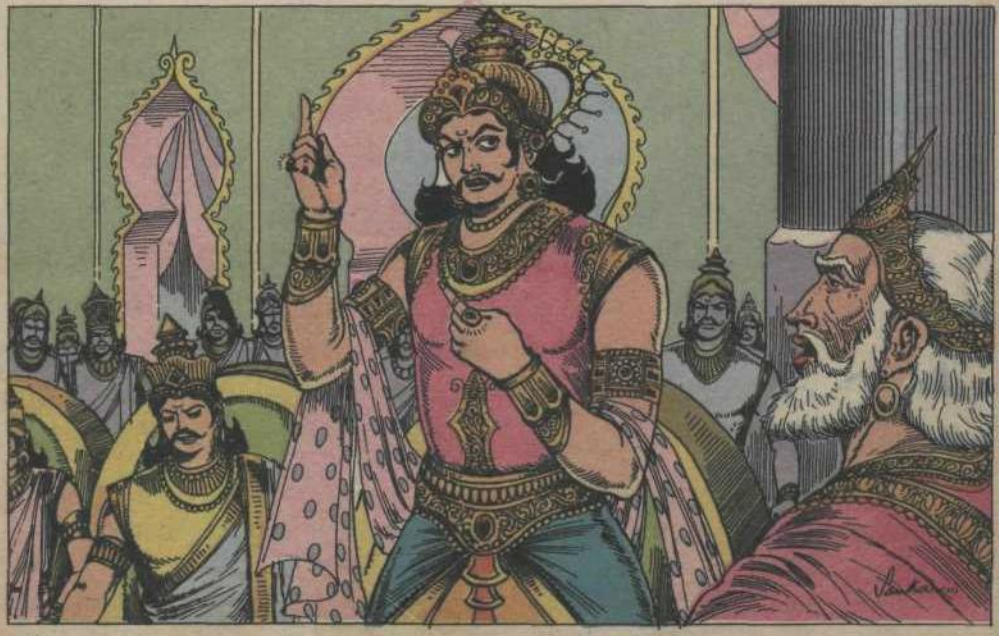

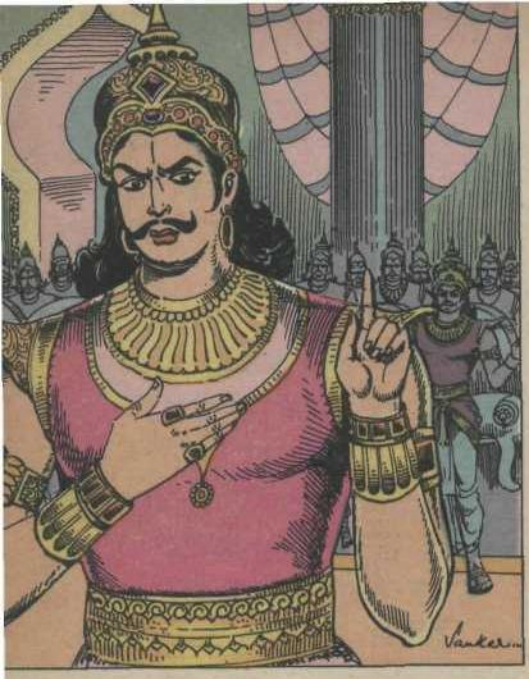

के लिए आधा राज्य पर्याप्त है। पांडवों को थोड़ा राज्य दे दो। अज्ञानता वश विनाश मत मोल लो।"

"मुझे किसी की बातों को सुनने की आवश्यकता नहीं है। पांडवों को जीतने के लिए मुझे किसी की सहायता की ज़रूरत नहीं है। केवल कर्ण तथा दुश्शासन मेरे पक्ष में हो तो पर्याप्त है। हम तीनों ही पांडवों का वध कर सकते हैं। मैं सूई की नोक के बराबर की ज़मीन भी पांडवों को नहीं दूंगा।" दूर्योधन ने कहा।

कर्ण ने दुर्योधन का समर्थन कर कहा कि वह युद्ध का पूरा भार वहन करेगा और किसी की सहायता के विना पांडवों को हरायेगा। उस की बातें सुनने पर भीष्म को घृणा हुई।

"हे कर्ण, तुम मूर्ख बनकर ऐसी बातें कहते हो। अर्जुन का पराक्रम तथा कृष्ण की शक्ति से भी परिचित हो कर तुम डींग क्यों मारते हो?" भीष्म ने कहा।

यह बात कर्ण को अपमानजनक लगी। उसने भीष्म से कहा—"आप के कहे अनुसार कृष्ण महान हैं, इसे मैं मानता हूँ। किंतु आपका मुझे दोष देना मैं सहन नहीं कर सकता। मैं इसी समय अस्त्रों का सन्यास ले रहा हूँ। जब तक आप युद्धक्षेत्र में रहेंगे, तब तक मैं युद्धभूमि में क़दम तक न रखूंगा। आप के अनंतर मेरे पराक्रम को और लोग देखेंगे।" ये शब्द कह कर कर्ण सभा से उठकर चला गया।

भीष्म परिहासपूर्वक हंसते दुर्योधन से बोला—"अकेले ही शत्रु को पराजित करने वाला पराक्रमी अस्त्र सन्यास ले रहा है। अब युद्ध का भार कौन वहन करेगा? इस पर कौन यक़ीन करेगा कि कर्ण अकेला शत्रु को जीतेगा? फिर भी जयद्रथ, बाह्लिक जैसे महान योद्धाओं के समक्ष इस प्रकार डींग मारना अनुचित नहीं है? अपने को ब्राह्मण बताकर परशुराम के पास इस ने आस्त्र प्राप्त करके अधर्म किया है।" भीष्म के वचन सुन दुर्योधन उनकी निंदा

करते बोला–"दादाजी, पांडव भी हम जैसे लोग हैं। वे भी हमारे साथ पैदा हुए हैं। हम भी अस्त्र-शस्त्र तथा युद्ध विद्याएँ जानते हैं। ऐसी हालत में कैसे बता सकते हैं कि पांडव ही विजयी होंगे। मैं इस युद्ध में किसी पर आधारित होनेवाला नहीं हूँ?"

दुर्योधन की युद्ध की कामना देख विदुर ने उसे एक कहानी सुनायी : एक बहेलिया ने जाल फेंका तो उस में दो चिड़ियाँ फंस गयीं। परंतु वे डरी नहीं, जाल के साथ आसमान में उड़ गयीं। उनका पीछा करते बहेलिया ज़मीन पर दौड़ने लगा। इसे देख एक मुनि ने उससे कहा–"अरे पागल, आसमान में उड़ कर जानेवाली चिड़ियों का जमीन पर पीछा करने से क्या फ़ायदा?" इस पर बहेलिया ने क्या उत्तर दिया, जानते हो! "मुनिवर, जब तक वे चिड़ियाँ आपस में नहीं लड़तीं तब तक मेरा प्रयत्न बेकार है। मगर जब वे आपस में लड़ने लग जायेंगी, तब वे चिड़ियाँ तथा मेरा जाल भी मेरे हाथ लग जायेंगे।" आखिर यही हुआ। चिड़िया लड़कर नीचे गिर गयीं। बहेलिया दोनों चिड़ियों को पकड़कर अपने जाल को लेकर चला गया।

यह कहानी सुनाकर विदुर ने दुर्योधन से कहा–"बेटा, ज्ञातियों का राज्य के वास्ते लड़ने से सर्वनाश हो जायगा; इसलिए ज्ञातियों को मैत्री के साथ रहना चाहिये। मैं तुम्हें एक और उदाहरण देता हूँ। हम लोग एक बार किरातों के साथ गंधमादन पर्वत पर गये। वहाँ पर एक भयंकर घाटी में शहद का छत्ता था। वहाँ के लोगों ने बताया कि शहद के सेवन से बुढ़ापा और मृत्यु न होगी और अंधों को आँखें प्राप्त होंगी। हमारे साथ आये हुए किरात उस शहद के लोभ में पड़कर भयंकर सर्पों से भरी उस घाटी में उतर पड़े और मर गये। वे लोग शहद के लोभ में तो पड़ गये, मगर उन्होने उसके प्राप्त करने में होनेवाले खतरे के बारे में नहीं सोचा। तुम लोगों को राज्य के वास्ते पांडवों के साथ युद्ध करना भी इसी प्रकार की मूर्खता ही होगी।"

शिव-लीलाएँ

[१]

महर्षि मृकंडु भृगु संतति का था। मरुद्वती उसकी पत्नी थी। उन्हें बहुत समय तक कोई संतान नहीं हुई, इसलिए वे निष्ठा पूर्वक तपस्या करते तीर्थों का सेवन करते हुए केदार क्षेत्र में आ पहुँचे।

एक दिन वह दंपति केदारेश्वर की अर्चना करके ध्यान मग्न था, तभी उन्हें यह ध्वनि सुनाई दी–"अब तुम अपने आश्रम को लौट जाओ। तुम्हें संतान की प्राप्ति होगी।" बड़ी प्रसन्नतापूर्वक वे घर लौट आये। यथापूर्वक गृहस्थाश्रम के धर्मों का पालन करते रहे। कुछ समय बाद मरुद्वती ने एक पुत्र का जन्म दिना। उसी समय आकाश से एक दिव्यवांणी सुनायी दी– "यह शिशु अल्प आयुवाला है। इसकी आयु बारह वर्ष की है।" ये शब्द सुनने पर उनका आनंद विषाद में बदल गया। आखिर यह सोचकर वे अपने को सांत्वना देने लगे–"यह सब शिव की लीला है। हम कर ही क्या सकते हैं?" तब वे शिशु के मंदहास में खो गये।

इसके उपरांत मृकंडु ने अपने पुत्र का नामकरण मार्कण्डेय किया। मार्कण्डेय दिन प्रतिदिन बढ़ता गया। उपनयन के बाद वह गुरुकुल में पढ़ने गया। ग्यारह वर्ष के अंदर सारी विद्याएँ सीख कर अपने माता-पिता के पास लौट आया। ब्रह्म तेज के साथ सुंदर दीखनेवाले अपने पुत्र को देखते ही माता-पिता का दिल धड़कने लगा। अब केवल एक वर्ष उसकी आयु है। मरुद्वती अपने पुत्र को गले लगाकर लगातार आँसू बहाती रही। परंतु मार्कण्डेय के पूछने पर उसने असली बात नहीं बतायी। आखिर मृकंडु ने ही भारी दिल

अंतिम पृष्ठ का चित्र

से मार्कण्डेय को बताया कि एक वर्ष में उसकी आयु समाप्त होगी।

यह बात सुनते ही मार्कण्डेय ने धैर्य के साथ अपने कर्तव्य का विचार किया और कहा–"आप दोनों मुझे आशीर्वाद दीजिये। मैं अभी तपस्या करने जा रहा हूँ। शिवजी के अनुग्रह से मृत्यु पर विजय पाकर चिरंजीवी हो लौट आऊँगा।" यों कहते उसने माता-पिता को प्रणाम किया। इस पर मरुद्वती तथा मृकंडु दोनों ने अपने पुत्र का आलिंगन करके आशीर्वाद दिया– "तुम चिरंजीवी हो जाओ!" उसी वक़्त वहाँ पर महर्षि नारद आ पहुँचा। मृकंडु ने नारद की पूजा करके अपने पुत्र का सारा समाचार उसे सुनाया। नारद ने मार्कण्डेय के दृढ़ संकल्प की प्रशंसा की और आशीर्वाद दिया–"बेटा मार्कण्डेय, तुम सीधे गौतमी के तट पर चले जाओ। वहाँ पर पंचाक्षरी का जाप करते हुए शिवजी की अर्चना करो। तुम्हारा मनोरथ सफल होगा।"

मार्कण्डेय ने गौतमी के तट पर पहुँच कर सैकत लिंग की प्रतिष्ठा की–"हे चन्द्रशेखर, तुम्हीं मेरी रक्षा करो। तुम्हारे चरणों में आये हुए मुझे यम क्या हानि कर सकते हैं?"

इस के बाद नारद समस्त लोकों का संचार करते हुए यम के पास पहुँचा और बोला–"मृत्यु पर विजय पाने की अभिलाषा से मार्कण्डेय तपस्या कर रहा है। अब तुम्हारे बल की परीक्षा का समय आ गया है।" यों कहकर नारद चला गया।

अब मार्कण्डेय की आयु समाप्त होने को है। यम ने मार्कण्डेय के प्राण लाने के लिए अपने दूतों को भेज दिया। किंतु यमदूत मार्कण्डेय के समीप जा नहीं सके, इसलिए लौट आये। उस वक़्त यम स्वयं अपने दण्ड तथा पाश को लेकर महिष पर सवार हो चल पड़ा।

मार्कण्डेय ने शिवलिंग पर अपना सर टिका कर उसके साथ आलिंगन किया और वह शिवजी के ध्यान में मग्न हो गया। उस वक़्त यम ने अपने पाश को मार्कण्डेय के कण्ठ पर फेंक दिया। वह पाश जाकर शिव लिंग पर गिर पड़ा। इस पर शिव लिंग में से शिवजी प्रलय रुद्र बन कर अपने तिसरे नेत्र को खोल कर आविर्भूत हुए और यम पर अपने त्रिशुल का निशाना लगाया। तब यम भय के मारे चिल्ला उठा–"हर हर! मेरी रक्षा करो।" और बेहोश हो गया।

शिवजी ने मार्कण्डेय के सर पर अपना अभय हस्त रख कर आशीर्वाद दिया–"हे वत्स! तुम्हें कभी मृत्यु न होगी। कल्प-कल्पांतरों तक तुम चिरंजीवी रहोगे।" इसके बाद सब देवताओं ने आकर शिवजी से प्रार्थना की कि यम के न रहने से अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित होंगी, अतः उसे क्षमा करें। शिवजी के अनुग्रह से यम इस प्रकार उठ बैठा मानों पुनर्जन्म पा चुका हो। तब शिवजी को प्रणाम करके यम अपने लोक में चला गया।

उसी समय अपने पुत्र को देखने आये हुए मरुद्वती तथा मृकंडु शिवजी का अनुग्रह प्राप्त मार्कण्डेय को देख परमानंदित हुए और शिव की लीलाओं की प्रशंसा करते अपने पुत्र को साथ लेकर अपने निवास की ओर लौट गये।

इसके बाद मार्कण्डेय चिरकाल तक जीवित रहा। मगर उससे भी अधिक समय तक जीवित रहनेवाले लोग भी हैं।

इंद्रद्युम्न नामक राजा ने अपने जीवनकाल में अत्यंत यश प्राप्त किया और उस यश के रहने तक वह स्वर्ग-सुखों का अनुभव करता रहा। इसके बाद स्वर्ग लोक के निवासियों ने उस से बताया–"भूलोक में तुम्हारी याद करनेवाला कोई नहीं है। इसलिए तुम्हें स्वर्ग में स्थान नहीं है। अतः तुम भूलोक में चले जाओ।"

इंद्रद्युम्न भूलोक को लौट आया और अपने नाम को सुननेवालों की खोज़ करते हुए मार्कण्डेय के पास आ पहुँचा। "मैं तुम को नहीं जानता, लेकिन मुझसे बड़ा व्यक्ति प्रावारकर्ण (उल्लू) है। उन से जाकर पूछ लो।" मार्कण्डेय ने उत्तर दिया।

इस पर वे दोनों मिलकर प्रावारकर्ण के पास पहुँचे।

"मैं तुम को नहीं जानता, मगर मुझसे भी आयु में बड़ा व्यक्ति नालीकजंघु है। चलो, उससे जाकर पूछ ले।" प्रावारकर्ण ने उत्तर दिया।

नालीकजंघु भी इंद्रद्युम्न को नहीं जानता था। लेकिन वह अन्य लोगों को साथ ले अपने से भी आयु में बड़े व्यक्ति आकूपार नामक कछुए के पास पहुँचा।

आकूपार ने इंद्रद्युम्न को देख कहा–"मैं तुमसे परिचित हूँ। तुमने कई बार मेरी रक्षा की है। मैं जिस सरोवर में रहता हूँ, वह कैसे बना, जानते हो? तुमने अनेक यज्ञ करके गायों को दान दिया, उन गायों के चलने से यहाँ पर सरोवर बना।"

इस पर देवताओं के दूत यह सोचकर इंद्रद्युम्न को स्वर्ग लोक में ले गये कि उसका यश अब भी भूलोक में शेष है।

१३३. "आल्बट्रास" पक्षी

दक्षिणी अमेरिका के दक्षिणी छोर से १२०० मील पूरब की ओर दक्षिण अट्लैण्टिक के अत्यंत शीतल प्रदेश में दक्षिण जार्जिया नामक टापू की पंक्ति में आल्बट्रास नामक एक छोटा-सा टापू है। उस में अल्बट्रास नामक अपूर्व पक्षियों का निवास है। ये जल के आश्रय में बढ़ते हैं। बड़े भारी पक्षी हैं। वे यदि अपने पंख फैला देते हैं, तो पक्षी की लबाई ११ फुट तक होती है। हवा निश्चल रही तो वे पक्षी उड़ नहीं पाते और न उतर ही सकते हैं। तेज हवा में उड़कर ये पक्षी फ़ी घंटे ६० मील की अपार गति के साथ उड़ सकते हैं। आल्बट्रास टापू में सदा तेज हवा चलती रहती है। इस चित्र में अल्बट्रास पक्षी का जोड़ा है।

Photo by P. Balaji Rao

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

ढूंढ़ के दिखलाऊँगी

प्रेषक :
रंमेश मोरे

Photo by P. Balaji Rao

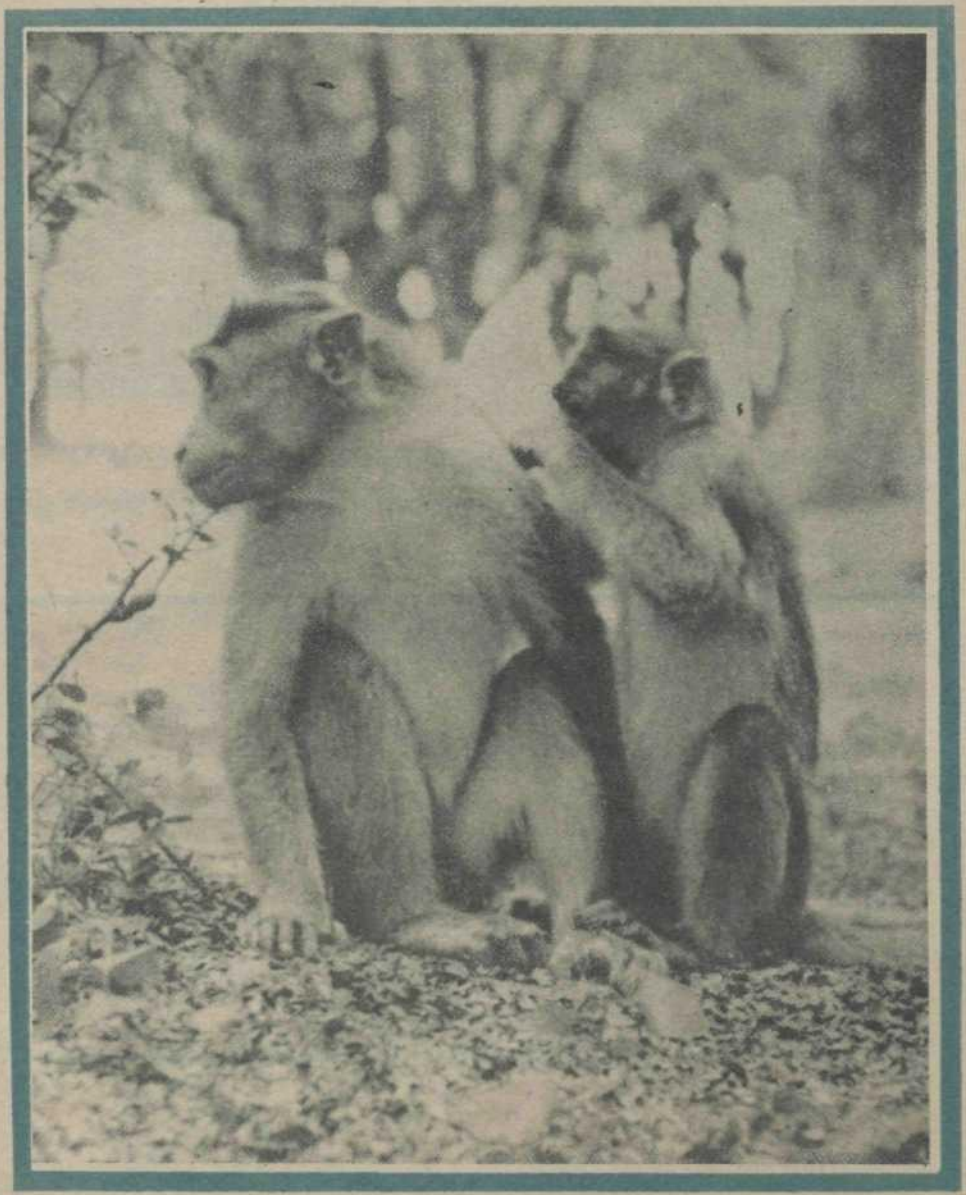

द्वारा एम. एम. जाधव
नया बाजार, नीमच सिटी.

मिल जाये तो खाऊँगी

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

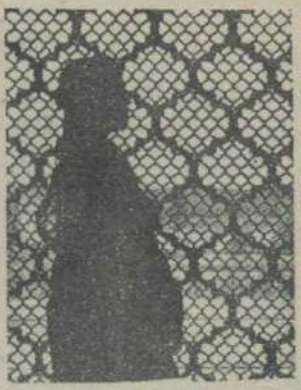

★

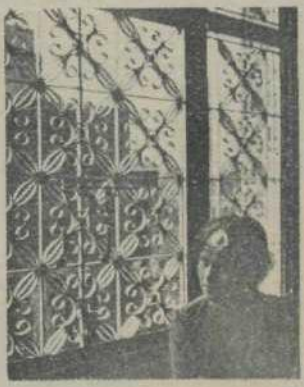

★ परिचयोक्तियाँ फ़रवरी ५ तक प्राप्त होनी चाहिए।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अप्रैल के अंक में प्रकाशित की जायंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य.

अग्नि-परीक्षा	...	३	उड़न खटोला	...	३१
यक्ष पर्वत	...	९	जायदाद के वास्ते	...	३८
प्राण-दान	...	१७	घमण्ड का फल	...	४२
उपाय	...	२३	कंजूस बुढ़िया	...	४५
अक़्ल की जांच	...	२५	महाभारत	...	४९
करनी का फल	...	२७	शिव-लीलाएँ	...	५७

दूसरा मुखपृष्ठ:
हरियाणा के लोक नृत्य

तीसरा मुखपृष्ठ:
बांग्रा नर्तक

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

अब लीजिये, NP काकीज़!

इन नये, निराले, दिलकश स्वादों में
ऑरेंज, मेंथाल, टूटी फ्रूटी

जी हाँ, बढ़िया से बढ़िया च्यूइंग गम सचमुच लाजवाब! मुँह ताजा रखनेवाला मनभाता स्वाद। आज खाइए, फिर हमेशा खाते रहेंगे।

दि नेशनल प्रॉडक्ट्स,
बेंगलोर-६

ठीक समय पर सही काम...

दिलजी, आज तुम्हारी स्कूल में क्रिकेट मैच था लेकिन मुझे तो जल्दी ही 'आउट' कर दिया।
अच्छा? मोनू, क्या हुआ बेटे?
हुआ यह कि सुनील ने 'शॉर्ट बॉल' दी, मैंने 'कट' करना चाहा लेकिन बॉल 'एज' पर लगी, उसने और विकेट कीपर ने झट 'कैच' कर लिया।
हुआ! लेकिन बेटे, शॉर्ट बॉल के लिए तो कई स्ट्रोक हैं, जैसे 'हुक'। अपनी दाँयीं ओर ऐसे घुमाते कि बॉल तुम्हारी बाँयीं ओर ऊँचाई पर आ जाती। फिर 'बैट' ऊपर की ओर घुमाते और हिट कर देते।
भरपूर ताकत से मारते तो इस तरह स्मूश घूम जाते कि विकेट कीपर शायद ठीक सामने होता।
और सोचो, बेटे, साढ़े छत बजने वाले हैं। खाने का आई। लेकिन हैं, तुमने अपने दाँत तो साफ कर लिए हैं न?
दिलजी, मैंने फोरहेन्स से अपने दाँत साफ कर लिए थे।
नहीं बेटे, ऐसे नहीं चलेगा। तुम्हें अपने दाँत हर रात और सवेरे ब्रश करने ही चाहिए। इससे दाँतों में फँसे सभी अन्न-कण निकल जाएँगे, दाँतों में सड़न नहीं होगी। तुम्हें मसूड़ों की भी मालिश करनी चाहिए ताकि वे स्वस्थ और मज़बूत रहें।
हाँ, पिताजी!
वाह, इस दैनिक फोरहेन्स टूथपेस्ट से अपने दाँत ब्रश कर लें।
Forhans
FOR THE GUMS
फोरहेन्स !
दाँतों के एक डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट।

और हंसते हंसते

लोट पोट

हो जाइए

हर अंक के साथ 25 से 40 पैसे
तक के मूल्य का उपहार मुफ़्त

मूल्य प्रति अंक **70** पैसे

लोटपोट, ए-5 मायापुरी, नई देहली-27

वाह!

कितना मीठा,
कितना मज़ेदार!

रंगबिरंग
कॅड्बरिज़
मिल्क चॉकलेट

जेम्स

नाचो-गाओ,
धूम मचाओ,

कॅड्बरिज़

जेम्स का
मज़ा उड़ाओ!

सिर्फ़
१ रु.

AIYARS-C.165 HN

Photo by RAM KRISHNA SHARMA